TV उत्तरशक्ति NEWS

मुंबई (महाराष्ट्र) से प्रकाशित

हिन्दी दैनिक

उत्तरशक्ति

हर खबर निष्पक्षता के साथ

मुंबई
वर्षः 9 अंक 91
रविवार, 11 अक्टूबर 2026
मूल्य 3 रुपए, पृष्ठ-6
RNI NO. MAHHIN/2018/76092
email ID- uttarshaktinews@gmail.com
www.uttarshaktinews.com

पांच दशक का वनवास खत्म, हनुमाननगर-चंद्रनगर के सूर्या परियोजना विस्थापितों को मिला जमीन का मालिकाना हक

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने ग्रामीणों को सौंपी शासन निर्णय की प्रति, तीन महीने में प्रत्येक पात्र लाभार्थी को सातबारा देने के निर्देश

पालघर(उत्तरशक्ति)। सूर्या परियोजना के तहत धामणी बांध के निर्माण के लिए विस्थापित होकर पालघर तहसील के हनुमाननगर और चंद्रनगर में बसाये गये परिवारों का पांच दशक लंबा संघर्ष आखिरकार समाप्त हो गया है। इन परिवारों को उनकी जमीन का मालिकाना हक प्रदान करने संबंधी शासन निर्णय की प्रति मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने शुक्रवार 9 अक्टूबर को ग्रामीणों को सौंपी। राज्य सरकार के ह्यसेवा संकल्प अभियान-2026ह्व के अंतर्गत हनुमाननगर में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने इसे दोनों गांवों के लिए ऐतिहासिक दिन बताते हुए कहा कि अब इन परिवारों के लिए न्याय और विकास की नई सुबह शुरू हुई है। मुख्यमंत्री ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया कि अगले तीन महीने के भीतर हनुमाननगर और चंद्रनगर के प्रत्येक पात्र लाभार्थी को सातबारा (भूमि स्वामित्व अभिलेख) उपलब्ध कराया जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि दस्तावेजों में तकनीकी त्रुटियों के कारण कोई भी पात्र परिवार अपने अधिकार से वंचित नहीं रहना चाहिए। धामणी बांध परियोजना के कारण विस्थापित हुए परिवारों के पुनर्वास की प्रक्रिया वर्ष 1968 में शुरू हुई थी। वर्ष 1978 तक इन परिवारों को हनुमाननगर और चंद्रनगर में बसाया गया तथा वर्ष 1982 में पुनर्वास पूरा होने की घोषणा की गई। हालांकि, जमीन की माप, सीमांकन और राजस्व अभिलेखों से संबंधित प्रक्रिया पूरी नहीं होने के कारण ग्रामीण दशकों तक अपनी ही जमीन के कानूनी मालिकाना हक से वंचित रहे। ग्रामीणों के लगातार प्रयासों, पालघर जिले के पालकमंत्री एवं वनमंत्री गणेश नाईक, जिलाधिकारी डॉ. इंदू रानी जाखड़ तथा परियोजना प्रभावितों की समिति के सहयोग से यह मामला मुख्यमंत्री कार्यालय तक पहुंचा। मुख्यमंत्री ने प्रस्ताव को 15 दिनों के भीतर मंत्रिमंडल के समक्ष प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। इसके बाद राज्य मंत्रिमंडल ने पिछले सप्ताह इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से मंजूरी दे दी। इस निर्णय से पांच दशक से लंबित समस्या के समाधान का रास्ता साफ हो गया।

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि शासन का निर्णय केवल कागजों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि इसका लाभ प्रत्येक पात्र परिवार तक पहुंचना चाहिए। उन्होंने कोंकण विभागीय आयुक्त और जिलाधिकारी को समयबद्ध तरीके से सातबारा अभिलेख जारी करने के निर्देश दिए। ग्रामीणों की मांग पर मुख्यमंत्री ने हनुमाननगर और चंद्रनगर को अपनी ओर से जिलाधिकारी को गोद देने की घोषणा भी की। उन्होंने दोनों गांवों में बुनियादी सुविधाओं का पुनर्मूल्यांकन कर सड़क, पेयजल

और अन्य आवश्यक सुविधाओं सहित ग्रामीण विकास से जुड़ी जरूरतों को पूरा करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया कि विकास कार्यों के लिए धन और निर्णयों की कमी नहीं होने दी जायेगी। तीन महीने बाद वे स्वयं इन कार्यों की प्रगति की समीक्षा करेंगे। चंद्रनगर में स्वतंत्र ग्राम पंचायत स्थापित करने का प्रस्ताव भी राज्य सरकार के विचाराधीन है। जनगणना प्रक्रिया के चलते नई ग्राम पंचायतों के गठन पर फिलहाल प्रतिबंध होने के बावजूद मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रस्ताव पूर्ण होने पर जनगणना आयुक्त से विशेष अनुमति लेकर चंद्रनगर ग्राम पंचायत को शीघ्र मंजूरी देने का प्रयास किया जायेगा। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि जमीन के मालिकाना हक का यह निर्णय केवल हनुमाननगर और चंद्रनगर तक सीमित नहीं रहेगा। पालघर जिले में विभिन्न विकास परियोजनाओं के कारण पुनर्वसित हुए, लेकिन अब तक जमीन का अधिकार नहीं पाने वाले सभी पात्र परियोजना प्रभावितों को इसी तर्ज पर न्याय दिलाया जायेगा। उन्होंने कहा कि वन अधिकार पट्टों के वितरण में पालघर जिला राज्य में अग्रणी है। अंतिम पात्र लाभार्थी को वन अधिकार पट्टा मिलने तक यह प्रक्रिया जारी रहेगी। साथ ही वन अधिकार धारकों तक शासन की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाने पर भी विशेष ध्यान दिया जायेगा।

पालघर जिले के विकास का रोडमैप प्रस्तुत करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि वाढवण बंदरगाह, प्रस्तावित विमानतल, बुलेट ट्रेन और विभिन्न सड़क परियोजनाओं के कारण पालघर महाराष्ट्र के विकास का महत्वपूर्ण प्रवेशद्वार बन रहा है। हालांकि, उन्होंने स्पष्ट किया कि विकास परियोजनाओं में स्थानीय लोगों और भूमिपुत्रों के हित सर्वोपरि रहेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे लिए परियोजनाओं से अधिक महत्वपूर्ण लोग हैं। भूमिपुत्रों को भूमिहीन करने वाला विकास, विकास नहीं बल्कि विनाश होगा। उन्होंने बताया कि पुनर्वास के लिए नए मानक निर्धारित किए जा रहे हैं। इनके तहत बेहतर बुनियादी सुविधाएं, सभी आवश्यक नागरिक सुविधाएं और रोजगार के अवसर पुनर्वास का अभिन्न हिस्सा होंगे। विकास का लाभ स्थानीय लोगों तक पहुंचे और उनके परिवारों की आर्थिक स्थिति मजबूत हो, इसी दृष्टिकोण से परियोजनाओं की योजना बनाई जा रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जनसेवा और ह्यसर्वजन हितायह्व के विचारों का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि आदिवासी समुदाय, किसान, खेत मजदूर और महिलाओं को विकास प्रक्रिया में सहभागी बनाकर पालघर जिले को महाराष्ट्र के पांच सबसे विकसित जिलों में शामिल करना उनका लक्ष्य है। ग्रामीणों को भावुक संदेश देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रभु श्रीराम और पांडवों के वनवास से भी अधिक लंबा संघर्ष आपने किया है। आज आपका वनवास समाप्त हुआ है और आपके जीवन में नई सुबह शुरू हुई है। उन्होंने इस निर्णय में योगदान देने वाले अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों, संस्थाओं और नागरिकों का अभिनंदन किया।

पैडल-पैडल में गूंजेगा नशामुक्त भारत का संकल्प

वाराणसी। गंगा की लहरों के सानिध्य में रविवार की सुबह साइकिल के पहिये फिटनेस का पैगाम लेकर आगे बढ़ेंगे। पैडल के साथ गूंजेगा नशामुक्त भारत का संकल्प और युवाओं को मिलेगा स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का संदेश। मौका होगा फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल के 94वें संस्करण का, जिसमें केंद्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेल तथा श्रम एवं रोजगार मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया युवाओं के साथ साइकिल चलाकर अभियान का नेतृत्व करेंगे।

नमो घाट पर रविवार सुबह छह बजे शुरू होने वाले इस आयोजन की थीम विकसित भारत के लिए नशामुक्त युवा है। यहां से साइकिल यात्रा संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के दीक्षा मंडप तक जाएगी। आयोजन में युवा, फिटनेस प्रेमी, आम नागरिक और खेल जगत की हस्तियां शामिल होंगी। उद्देश्य साफ है–युवाओं को नशे से दूर

रखकर खेल, व्यायाम और सकारात्मक गतिविधियों से जोड़ना।

आयोजन में 2026 के आइची-नागोया एशियाई खेलों के पदक विजेता खिलाड़ी भी हिस्सा लेंगे। इनमें महिलाओं की 400 मीटर दौड़ की कांस्य पदक विजेता प्राची चौधरी, महिलाओं की 3000 मीटर स्टीपलचेज और 5000 मीटर दौड़ में कांस्य पदक जीतने वाली पारुल चौधरी, रिले स्पधाओं में पदक हासिल करने वाले जय कुमार और भारतीय हॉकी टीम के स्वर्ण पदक विजेता राज कुमार पाल शामिल हैं। इन खिलाड़ियों की भागीदारी युवाओं को अनुशासन, नियमित अभ्यास और दृढ़ संकल्प की प्रेरणा देगी। खेल के मैदान में देश का गौरव बढ़ाने वाले खिलाड़ियों के साथ साइकिल चलाना प्रतिभागियों के लिए फिटनेस को जीवन का हिस्सा बनाने का संदेश भी होगा।

योग-जुंबा से बढ़ेगा उत्साहः साइकिल यात्रा के साथ नमो घाट पर योग सत्र, जुंबा, मनोरंजक खेल और संवादात्मक गतिविधियां भी आयोजित होंगी। इनके जरिये लोगों को नियमित व्यायाम और सक्रिय जीवनशैली के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। अभियान इस विचार को मजबूत करता है कि फिट रहना किसी एक दिन की कवायद नहीं, बल्कि रोजमर्रा की आदत होनी चाहिए.

मंत्र, आरती और रोशनी से महकेगी काशी, आज से शारदीय नवरात्र

- **कलश स्थापना के साथ आज से शारदीय नवरात्र का शुभारंभ, नौ दिनों तक गूंजेगा मां दुर्गा का जयकारा**
- **512 सार्वजनिक पूजा पंडालों में सजेगी देवी प्रतिमा, देश के प्रसिद्ध मंदिरों और समसामयिक विषयों की झलक बनेंगे आकर्षण**

सुरेश गांधी

वाराणसी। शरद ऋतु की दस्तक के साथ ही काशी की गलियों में भक्ति का रंग गहराने लगा है। कहीं मां दुर्गा की प्रतिमाओं को अंतिम रूप दिया जा रहा है तो कहीं बांस, कपड़े और आकर्षक सज्जा से भव्य पूजा पंडाल आकार ले रहे हैं। घरों में पूजन सामग्री जुटाई जा रही है और बाजारों में चुनरी, नारियल, कलश, दीपक, फूल-माला तथा देवी के श्रृंगार की वस्तुओं की खरीदारी तेज हो गई है। रविवार से शारदीय नवरात्र की शुरूआत के साथ ही काशी नौ दिनों तक शक्ति की आराधना में डूब जाएगी। आश्विन शुक्ल प्रतिपदा पर शुरू होने वाला यह पर्व केवल पूजा-पाठ का अनुष्ठान नहीं, बल्कि शक्ति, साधना और सामाजिक उल्लास का उत्सव भी है। घरों में कलश स्थापना और देवी के प्रथम स्वरूप मां शैलपुत्री की आराधना होगी। मंदिरों में दर्शन-पूजन के लिए श्रद्धालुओं की आवाजाही बढ़ेगी तो शाम ढलते ही पूजा पंडालों में सजी रोशनी, देवी प्रतिमाओं और कलात्मक सज्जा के दर्शन के लिए लोगों की भीड़ उमड़ने लगेगी।

शुभ मुहूर्तः शारदीय नवरात्र का आरंभ आश्विन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि पर होगा। पंचांग के अनुसार, प्रतिपदा तिथि 10 अक्टूबर की रात 9:19 बजे शुरू होकर 11

अक्टूबर की रात लगभग 9:30 बजे तक रहेगी। उदया तिथि के आधार पर रविवार को नवरात्र का पहला दिन माना जाएगा। घट स्थापना के शुभ मुहूर्त को लेकर अलग-अलग पंचांगों में कुछ अंतर है। सामान्य पंचांग गणना के अनुसार सुबह लगभग 6:19 से 10:12 बजे तक घट स्थापना का समय दिया गया है। वहीं, बीएचयू के ज्योतिषाचार्य प्रो. विनय पांडेय के हवाले से प्रकाशित काशी की स्थानीय गणना में सुबह 11:20 से दोपहर 12:07 बजे तक 47 मिनट का अभिजित मुहूर्त बताया गया है। इस वर्ष चित्रा नक्षत्र और वैधृति योग का संयोग होने के कारण मुहूर्त के चयन में विशेष सावधानी बरतने की सलाह दी जा रही है।

घर पर ऐसे करें कलश स्थापनाः घट स्थापना के लिए पूजा स्थल की सफाई करके उसे गंगाजल अथवा स्वच्छ जल से पवित्र करें। लकड़ी की चौकी या उपयुक्त स्थान पर लाल अथवा पीला वस्त्र बिछाएं। उसके पास मिट्टी के पात्र में स्वच्छ मिट्टी भरकर जौ बोएं। जौ को समृद्धि और शुभता का प्रतीक माना जाता है। इसके बाद तांबे, पीतल अथवा मिट्टी के स्वच्छ कलश में जल भरें। परंपरा के अनुसार उसमें अक्षत, सुपारी, सिक्का और सुगंधित द्रव्य रखे जा सकते हैं।

कलश के मुख पर आम अथवा उपलब्ध पवित्र पत्ते रखें और ऊपर नारियल स्थापित करें। कलश पर रोली से स्वस्तिक बनाएं तथा मौली बांधें। अब मां दुर्गा की प्रतिमा अथवा चित्र के सामने दीपक जलाकर गणेश वंदना करें। इसके बाद मां शैलपुत्री का स्मरण करते हुए कलश स्थापना का संकल्प लें। घट स्थापना के समय यह मंत्र पढ़ सकते हैं– ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। यह देवी उपासना का प्रसिद्ध मंत्र है। कलश स्थापना के पारंपरिक वैदिक मंत्र और संकल्प अपने पुरोहित से भी पढ़वाए जा सकते हैं।

प्रदर्शनकारियों पर कार्रवाई से भड़कीं प्रियंका गांधी, बोलीं-लोकतंत्र नहीं, देश में चल रही तानाशाही

नई दिल्ली, 10 अक्टूबर। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने दिल्ली में प्रदर्शनकारियों पर कार्रवाई को लेकर शनिवार को आरोप लगाया कि "भारत में अब लोकतंत्र नहीं रहा, बल्कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के नेतृत्व में तानाशाही चलाई जा रही है।" प्रियंका गांधी वाद्रा ने कहा कि लोकतंत्र को कमजोर करने और उसे नष्ट करने में सहयोग करने वाले लोग देश के खिलाफ देशद्रोह कर रहे हैं। प्रियंका गांधी ने 'एक्स' पर पोस्ट करके आरोप लगाया कि पहले 254 सांसदों के साथ मारपीट की गई और उन्हें पूरी तरह अवैध तरीके से हिरासत में लिया गया, जिससे उनके बुनियादी संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन हुआ। उन्होंने कहा कि विपक्षी दलों के अन्य प्रदर्शनकारियों के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया

गया। कांग्रेस नेता ने यह भी कहा कि इसके बाद राष्ट्रीय राजधानी की घेराबंदी कर दी गई। उन्होंने कहा कि दिल्ली को चारों ओर से बैरिकेडिंग करके सील कर दिया गया, ट्रेनों और मेट्रो सेवाओं को रोका गया, इंटरनेट बंद कर दिया गया और जगह-जगह चेक पोस्ट बना दिए गए। प्रियंका गांधी के मुताबिक, अपने संवैधानिक अधिकार के तहत विरोध प्रदर्शन कर रहे युवक-युवतियों के साथ मारपीट की गई और उन्हें हिरासत में लिया गया। प्रियंका गांधी ने चुनाव प्रक्रिया और निर्वाचन आयोग की भूमिका पर भी सवाल उठाए।

कानून तोड़ने वाले बच्चों के नाम इंटरनेट पर सार्वजनिक न हों: प्रधान न्यायाधीश

नई दिल्ली, 10 अक्टूबर। भारत के प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत ने शनिवार को कहा कि कानून का उल्लंघन करने वाले बच्चों के नाम समाचारों एवं इंटरनेट पर सार्वजनिक नहीं किए जाने चाहिए, क्योंकि यह वाक्यांश उसकी परिस्थिति को दशार्ता है, न कि उसकी पहचान को। प्रधान न्यायाधीश ने उच्चतम न्यायालय की किशोर न्याय समिति द्वारा संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (यूनिसेफ) के सहयोग से आयोजित किशोर न्याय (बच्चों की देखरेख और संरक्षण) अधिनियम, 2015 के 10 वर्षः प्रगति, चुनौतियां और अगले दशक की प्राथमिकताएं विषय पर राष्ट्रीय वार्षिक हितधारक परामर्श कार्यक्रम का उद्घाटन करने के बाद कहा कि किसी कानून के लिए 10 वर्ष का समय कम होता है लेकिन यह किसी बच्चे के बचपन के आधे से भी अधिक समय के बराबर है। उन्होंने कहा कि 2015 का यह अधिनियम इस सोच पर आधारित है कि किसी बच्चे पर अपराधी का ठप्पा लगाने के बजाय उसे दूसरा मौका दिया जाए तो उसके समाज का एक उपयोगी सदस्य बनने की संभावना कहीं अधिक होती है। उन्होंने कहा, यह यात्रा वास्तव में तभी पूरी होती है, जब अतीत की छाया भविष्य पर पड़नी बंद हो जाए। इसके लिए हमें पुराने रिकॉर्ड समय पर नष्ट करने होंगे और कानून का उल्लंघन करने वाले बच्चों के नाम समाचारों और इंटरनेट पर सार्वजनिक होने से रोकने होंगे, क्योंकि एक बार इंटरनेट पर आने के बाद ये नाम वर्षों तक वहां बने रह सकते हैं। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि जनवरी 2016 में जब यह अधिनियम लागू हुआ था, तब किशोर न्याय बोर्ड के समक्ष पेश किए गए 15 वर्षीय बच्चे की उम्र आज लगभग 25 वर्ष होगी और इस अधिनियम ने उस बच्चे से जो पहला वादा किया था, वह इसमें इस्तेमाल किए गए शब्दों में ही निहित है। उन्होंने कहा, कानून का उल्लंघन करने वाला बच्चा वाक्यांश उस बच्चे की परिस्थिति को दशार्ता है, न कि उसकी पहचान को। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि ऐसे बच्चों की परिस्थितियां आमतौर पर कठिन होती हैं।

उन्होंने कहा कि उनकी कहानियों में अक्सर पढ़ाई बीच में छूटने, परिवारों के मुश्किल हालात से गुजरने और गरीबी जैसी समस्याएं सामने आती हैं। प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि यदि किसी बच्चे से बातचीत करने और उसकी ओर से बोलने वाला कोई नहीं है, तो उसे अपनी बात रखने का अधिकार देने का कोई विशेष मतलब नहीं रह जाता। उन्होंने कहा कि इसी कारण राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नालसा) की 2024 की बाल-अनुकूल विधिक सेवा योजना में पुलिस थानों में बच्चों के लिए वकील और प्रत्येक किशोर न्याय बोर्ड में विधिक सेवा क्लिनिक की व्यवस्था की गई है। न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने कहा, इसके बावजूद कई बोर्ड में अब भी ऐसे क्लिनिक नहीं हैं। इनके अभाव में बच्चे की देखभाल और कल्याण से जुड़े शुरूआती फैसले उचित कानूनी प्रतिनिधित्व के बिना लिए जाने की संभावना है। उन्होंने विधिक सेवा संस्थानों से बच्चों के लिए प्रशिक्षित बचाव पक्ष के वकीलों का एक अलग प्रकोष्ठ बनाने पर भी विचार करने का आग्रह किया, ताकि प्रत्येक बच्चे को शुरूआत से ही एक समर्पित वकील मिल सके। प्रधान न्यायाधीश ने नियमित और स्वतंत्र मूल्यांकन की आवश्यकता पर भी जोर दिया ताकि निजता का उचित ध्यान रखते हुए यह पता लगाया जा सके कि कितने बच्चे दोबारा विद्यालय गए, कितनों को रोजगार मिला और कितनों को फिर कभी किशोर न्याय बोर्ड के समक्ष पेश नहीं होना पड़ा।

TIWARI'S
SARASWATI CLASSES
Since 1992
Parents' First Choice for 34+ Years
Prof. Dr. Dayanand Tiwari
Founder & Academic Director
ADMISSIONS OPEN
9th | 10th | 11th | 12th SCIENCE
NEET | JEE | MHT-CET
10 DAYS FREE DEMO
Attend Classes • Experience Our Teaching
Take Admission After Satisfaction
(No Hidden Conditions)
✓ 34+ Years of Academic Excellence
✓ Experienced & Dedicated Faculty
✓ Personal Attention
✓ Printed Notes & Regular Tests
✓ Strong Foundation for Boards & Competitive Exams
Santacruz Branch
101 Sai Chambers,
Opp. Santacruz Railway Station (East),
Near Depot, Santacruz (E), Mumbai-400055
Sion Branch
Opp. SIES College (Old),
Near Gurukripa Hotel,
Sion (West), Mumbai
Limited Seats / Small Batch Size
CALL NOW:
7738007373

DAKS REHAB CENTRE
(PARALYSIS PHYSIOTHERPHY CENTER AND OLD AGE HOME)
Contact us: 9820519851
विल्डिंग नंबर 3, प्लॉट नंबर 3, आदर्श घरकुल सोसायटी सायन कोलीवाडा जीटीबी नगर मुंबई-37
* Stroke/Paralysis/Complete Rehab Centre
* बाहर से आये रोगी और उनके परिजनो के ठहरने कि व्यवस्था
* वृद्ध लोगों के लिए रहने की सुविधा उपलब्ध
* DM/HT/THYROID इन सब से कैसे बचें
* NGO में मिलनेवाली सहायता को लोगों में देना
* चिकिस्ता उपकरणो को किराये और बिक्री सुविधा उपलब्ध
* एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध
* पोस्ट ऑपरेटिव रिहैब सेंटर
* मरीजों के लिए घर पर 12 और 24 घंटे जीडीए परिचारक
* विशेषज्ञ डॉक्टरो से ऑनलाइन और ऑफलाइन परामर्श की सुविधा उपलब्ध
* मासिक ईएमआई के आधार पर व्यक्तीयों, परिवारो और माता-पिता के लिए स्वास्थ्य निती की चिकिस्ता सुविधा उपलब्ध

नित्य घटित हो रही घटनाएँ, शासन देखे, चुप रह जाए?

-विक्रम दयाल

आज के बदलते सामाजिक परिवेश में एक प्रश्न बार-बार जनमानस को झकझोरता है कि जब समाज में नित्य नई-नई घटनाएँ घटित हो रही हों, जब अपराध, शोषण, असुरक्षा, भ्रष्टाचार और मानवीय संवेदनहीनता की खबरें लोगों को विचलित कर रही हों, तब शासन-प्रशासन की भूमिका क्या होनी चाहिए? क्या घटनाओं को देखना, उन पर औपचारिक प्रतिक्रिया देना और फिर अगली घटना की प्रतीक्षा करना ही व्यवस्था की जिम्मेदारी है? अथवा शासन का वास्तविक दायित्व समस्याओं की जड़ तक पहुँचकर उनका स्थायी समाधान करना भी है? लोकतंत्र में शासन केवल सत्ता संचालन का माध्यम नहीं, बल्कि जनविश्वास, जनसुरक्षा और जनकल्याण का उत्तरदायी आधार है। जनता अपने प्रतिनिधियों को इसलिए चुनती है कि वे उसकी समस्याओं को समझें, उसकी आवाज सुनें और उसे भयमुक्त वातावरण प्रदान करने के लिए आवश्यक कदम उठाएँ। जब आम नागरिक अपने अधिकारों, सम्मान और सुरक्षा को लेकर चिंतित रहने लगे, तब व्यवस्था के सामने आत्ममंथन का प्रश्न खड़ा होना स्वाभाविक है। घटनाएँ अनेक, समाधान कहाँ? समाज में घटित होने वाली प्रत्येक घटना के पीछे अलग-अलग परिस्थितियाँ हो सकती हैं। कहीं व्यक्तिगत वैमनस्य होता है, कहीं आर्थिक विवशता, कहीं सामाजिक भेदभाव, तो कहीं कानून का भय कम होने की आशंका। महिलाओं के विरुद्ध अपराध, बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार, कमजोर वर्गों का शोषण, ठगी, हिंसा, बेरोजगारी से उपजी निराशा और सार्वजनिक जीवन में बढ़ती असहिष्णुता जैसी समस्याएँ केवल समाचारों का विषय नहीं हैं। इनके पीछे किसी परिवार का दर्द, किसी माँ की चिंता, किसी पिता की विवशता और किसी बच्चे के भविष्य का संकट छिपा हो सकता है। प्रश्न यह नहीं कि हर घटना के लिए सीधे शासन को दोषी ठहरा दिया जाए। प्रश्न यह है कि ऐसी घटनाओं को रोकने, अपराधियों के विरुद्ध निष्पक्ष कार्रवाई करने और पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिए व्यवस्था कितनी तत्पर है। किसी घटना के बाद जाँच का आश्वासन देना आवश्यक है, लेकिन उससे भी अधिक आवश्यक है जाँच का निष्पक्ष निष्कर्ष, समय पर न्याय और ऐसी व्यवस्था, जिससे उसी प्रकार की घटना दोबारा न हो। दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति तब उत्पन्न होती है, जब किसी गंभीर घटना पर कुछ समय तक चर्चा होती है, बयान दिए जाते हैं, आश्वासन मिलते हैं और फिर जनचर्चा किसी नई घटना की ओर मुड़ जाती है। पीड़ित परिवार अपनी पीड़ा के साथ रह जाता है और समाज अगले संकट की प्रतीक्षा करने लगता है। यह स्थिति किसी भी संवेदनशील समाज के लिए चिंता का विषय है।

महिला सुरक्षा केवल नारा नहीं, जिम्मेदारी हैः

किसी भी सभ्य समाज की पहचान इस बात से होती है कि वहाँ महिलाओं को कितना सम्मान और सुरक्षा प्राप्त है। बेटियों को शिक्षा, आत्मनिर्भरता और समान अवसर देने की बातें तभी सार्थक होंगी, जब वे घर से बाहर निकलते समय भय और असुरक्षा से मुक्त महसूस करें।

महिलाओं के विरुद्ध अपराध होने पर केवल कठोर कानूनों की चर्चा पर्याप्त नहीं है। शिकायत दर्ज कराने की सहज व्यवस्था, पुलिस की संवेदनशीलता, समयबद्ध जाँच, पीड़ित की पहचान और गरिमा की रक्षा तथा न्यायिक प्रक्रिया में अनावश्यक विलंब को कम करना भी उतना ही आवश्यक है। साथ ही, परिवारों, शिक्षण संस्थानों और समाज को ऐसी मानसिकता विकसित करनी होगी, जिसमें महिलाओं के प्रति सम्मान बचपन से ही संस्कार का हिस्सा बने।

सुरक्षा की जिम्मेदारी केवल महिलाओं पर सावधानी बरतने का बोझ डालकर पूरी नहीं हो सकती। जिम्मेदारी उस व्यवस्था की भी है, जो कानून लागू करती है, सार्वजनिक स्थानों को सुरक्षित बनाती है और अपराध करने वालों को जवाबदेह ठहराती है। महँगाई और बेरोजगारी भी सामाजिक चिंता हैंः समाज में अशांति और निराशा के अनेक कारण होते हैं। महँगाई से जूझता परिवार जब रसोई का खर्च पूरा करने में कठिनाई महसूस करता है, तब उसकी आर्थिक परेशानी धीरे-धीरे मानसिक तनाव में भी बदल सकती है। बेरोजगार युवा जब योग्यता और परिश्रम के बावजूद अवसरों के लिए संघर्ष करता है, तब उसके मन में भविष्य को लेकर प्रश्न उठना स्वाभाविक है। यह कहना उचित नहीं होगा कि हर अपराध या सामाजिक समस्या का कारण केवल महँगाई और बेरोजगारी है। फिर भी इन चुनौतियों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। रोजगार के अवसरों का विस्तार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास, छोटे व्यापारियों को सहयोग और जरूरतमंद परिवारों तक योजनाओं का वास्तविक लाभ पहुँचाना सामाजिक स्थिरता को मजबूत कर सकता है। सरकारी योजनाओं की घोषणा अपनी जगह महत्वपूर्ण है, लेकिन उनकी सफलता का वास्तविक पैमाना यह है कि उनका लाभ कितने जरूरतमंद लोगों तक पहुँचा। कागजों पर उपलब्ध सुविधा और नागरिक के जीवन में उपलब्ध सुविधा के बीच यदि बड़ी दूरी बनी रहे, तो उस दूरी को पाटना शासन की प्राथमिकता होनी चाहिए। शासन की चुप्पी से अधिक खतरनाक है जवाबदेही का अभावः लोकतंत्र में प्रत्येक घटना पर शासन की प्रतिक्रिया का स्वरूप अलग हो सकता है। कभी तत्काल कार्रवाई आवश्यक होती है, तो कभी तथ्यों की पुष्टि के बाद निर्णय लेना उचित होता है। इसलिए हर मौन को दोष स्वीकार करना या हर प्रतिक्रिया को समाधान मान लेना भी सही नहीं है। किंतु किसी गंभीर समस्या पर लगातार निष्क्रियता, अस्पष्टता अथवा जवाबदेही के अभाव का अनुभव जनता के विश्वास को कमजोर कर सकता है। शासन की विश्वसनीयता केवल भाषणों और घोषणाओं से नहीं बनती। वह तब बनती है, जब कानून सबके लिए समान रूप से लागू हो, शिकायतकर्ता को सुना जाए, भ्रष्टाचार की शिकायतों की निष्पक्ष जाँच हो और जिम्मेदार पदों पर बैठे लोगों से उनके कार्यों का हिसाब माँगा जा सके। यदि किसी विभाग में लापरवाही सामने आती है, तो केवल छोटे कर्मचारियों पर कार्रवाई करके पूरे प्रकरण को समाप्त मान लेना पर्याप्त नहीं होना चाहिए। जहाँ जिस स्तर पर जिम्मेदारी निर्धारित होती है, वहाँ उसी के अनुरूप निष्पक्ष कार्रवाई होनी चाहिए। इससे न केवल पीड़ित को न्याय मिलने की संभावना बढ़ती है, बल्कि भविष्य में लापरवाही रोकने का संदेश भी जाता है। कानून का भय और न्याय का विश्वास, दोनों जरूरीः

एक मजबूत व्यवस्था के लिए केवल दंड का भय पर्याप्त नहीं है। नागरिकों को यह विश्वास भी होना चाहिए कि उनके साथ अन्याय होने पर उन्हें न्याय मिलेगा। कानून का निष्पक्ष पालन, पुलिस और प्रशासन की जवाबदेही तथा न्यायिक प्रक्रिया में पारदर्शिता इसी विश्वास को मजबूत करते हैं। अपराधी कितना प्रभावशाली है, पीड़ित कितना गरीब है या शिकायत करने वाला व्यक्ति सामाजिक रूप से कितना कमजोर है–इन आधारों पर न्याय की दिशा नहीं बदलनी चाहिए। कानून के सामने समानता लोकतंत्र की मूल भावना है। यदि आम नागरिक को लगे कि प्रभावशाली व्यक्ति के लिए रास्ते अलग हैं और कमजोर व्यक्ति के लिए नियम अलग, तो यह धारणा संस्थाओं के प्रति विश्वास को चोट पहुँचाती है। यह भी आवश्यक है कि अफवाह, अधूरी जानकारी और सोशल मीडिया पर प्रसारित अपुष्ट दावों के आधार पर किसी को दोषी घोषित न किया जाए। निष्पक्ष जाँच और न्यायिक प्रक्रिया का सम्मान करते हुए ही सच्चाई सामने लाई जा सकती है। न्याय की माँग जितनी आवश्यक है, न्यायपूर्ण प्रक्रिया भी उतनी ही आवश्यक है। समाज भी अपनी जिम्मेदारी से मुँह न मोड़ेः सारी जिम्मेदारी शासन पर डालकर समाज स्वयं को निर्दोष नहीं ठहरा सकता। परिवारों में बढ़ती कटुता, पड़ोसियों के प्रति उदासीनता, सार्वजनिक स्थानों पर गलत आचरण देखकर भी चुप रहना और अन्याय के समय पीड़ित का साथ न देना भी सामाजिक कमजोरी के संकेत हैं। जब किसी कमजोर व्यक्ति के साथ अन्याय हो, तो समाज को कानूनसम्मत तरीके से उसकी सहायता करनी चाहिए। जब किसी महिला के साथ दुर्व्यवहार हो, तो तमाशबीन बनने के बजाय सुरक्षित और उचित सहायता उपलब्ध कराने की भावना होनी चाहिए। जब किसी बुजुर्ग को सहारे की जरूरत हो, तो उसे बोझ समझने के बजाय सम्मान देना चाहिए। और जब किसी सार्वजनिक समस्या का समाधान सामूहिक प्रयास से संभव हो, तो नागरिकों को भी अपनी भूमिका निभानी चाहिए। समाज की संवेदनशीलता ही व्यवस्था को जागरूक रखने की शक्ति बन सकती है। जागरूक नागरिक प्रश्न पूछते हैं, तथ्यों की पड़ताल करते हैं, शिकायतों को उचित मंच तक पहुँचाते हैं और जनहित के मुद्दों को जीवित रखते हैं। यह विरोध के लिए विरोध नहीं, बल्कि लोकतंत्र को स्वस्थ बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। अब जरूरत है ठोस कदमों कीः समस्याओं के स्थायी समाधान के लिए शासन और प्रशासन को कुछ बुनियादी प्राथमिकताओं पर निरंतर काम करना होगा। गंभीर अपराधों की शिकायतों पर त्वरित और निष्पक्ष कार्रवाई सुनिश्चित हो। महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों और कमजोर वर्गों की सुरक्षा को व्यावहारिक प्राथमिकता मिले। सरकारी योजनाओं के लाभ और खर्च का पारदर्शी मूल्यांकन हो। महँगाई के दबाव से प्रभावित परिवारों और रोजगार की तलाश कर रहे युवाओं के लिए प्रभावी अवसर बढ़ाए जाएँ। प्रशासनिक लापरवाही और भ्रष्टाचार के मामलों में जिम्मेदारी तय हो तथा कार्रवाई की जानकारी जनता तक पहुँचे।

उपचुनावों में करारी शिकस्त के बाद अब किस पर ठीकरा फोड़ेगी कांग्रेस?

अशोक भाटिया

भारतीय लोकतंत्र का मिजाज अब पूरी तरह बदल चुका है, लेकिन देश की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी कांग्रेस का चुनावी शिकस्त के बाद का बर्ताव आज भी पुराना और पूरी तरह अनुमानित नजर आता है। हाल ही में अक्टूबर 2026 में संपन्न हुए लोकसभा और विधानसभा उपचुनावों के नतीजों ने एक बार फिर कांग्रेस की सांगठनिक कमजोरियों और वैचारिक खोखलेपन को पूरी तरह उजागर कर दिया है। असम की प्रतिष्ठित नगांव लोकसभा सीट से लेकर पश्चिम बंगाल के नंदीग्राम और मुस्लिम-बहुल रेजीनगर विधानसभा क्षेत्र, तथा पुदुचेरी की थट्टांचवडी सीट तक–हर तरफ कांग्रेस को करारी और अपमानजनक हार का सामना करना पड़ा है। इस ताजा चुनावी झटके ने राजनीतिक गलियारों में एक गंभीर और बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है कि लगातार मिल रही इन पराजयों के बाद अब कांग्रेस अपनी नाकामी का ठीकरा किस संवैधानिक संस्था, व्यक्ति या व्यवस्था के सिर पर फोड़ेगी? कांग्रेस और उसके शीर्ष नेतृत्व का यह इतिहास रहा है कि जब भी चुनावी नतीजे उनके विपरीत आते हैं, वे बिना किसी पुख्ता सबूत के देश की सबसे विश्वसनीय संवैधानिक संस्थाओं पर कीचड़ उछालना शुरू कर देते हैं। इन उपचुनावों के मतदान से ऐन पहले, दिल्ली की सड़कों पर राहुल गांधी और विपक्ष के नेताओं द्वारा मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर किया गया उग्र प्रदर्शन इसी सोची-समझी रणनीति का हिस्सा था। कांग्रेस ने स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन की आड़ में 'करोड़ों मतदाताओं के नाम काटे जाने' और 'वोट चोरी' का एक भ्रामक नैरेटिव गढ़ने की पुरजोर कोशिश की, जिसे सुप्रीम कोर्ट के वैधानिक स्पष्टीकरणों और स्वतंत्र जांचों ने पूरी तरह खारिज कर दिया। भारतीय जनता पार्टी का इस पर बेहद कड़ा और तार्किक पक्ष है कि जब कांग्रेस हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक या तेलंगाना में चुनाव जीतती है, तब लोकतांत्रिक प्रक्रिया और निर्वाचन प्रणाली बिल्कुल पवित्र हो जाती है, लेकिन असम के नगांव या बंगाल के रेजीनगर में जनता जब उन्हें नकार देती है, तो वही व्यवस्था 'कठपुतली' नजर आने लगती है। यह दोहरा रवैया न केवल देश के करोड़ों मतदाताओं के विवेक का अपमान है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारतीय लोकतंत्र की छवि को धूमिल करने का एक गैर-जिम्मेदाराना प्रयास भी है।

पश्चिम बंगाल की रेजीनगर विधानसभा सीट के चुनावी नतीजे कांग्रेस के पारंपरिक तुष्टिकरण के नैरेटिव पर सबसे बड़ा और सीधा प्रहार हैं। लगभग 70 प्रतिशत मुस्लिम आबादी वाले इस निर्वाचन क्षेत्र में भाजपा उम्मीदवार शंखराव सरकार ने करीब 75,000 से अधिक वोटों के विशाल अंतर से ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। इस सीट पर कांग्रेस दूर-दूर तक मुकाबले में भी नजर नहीं आई। कांग्रेस हमेशा से यह मानकर चलती रही है कि देश का अल्पसंख्यक मतदाता उसका बंधुआ वोट बैंक है, जिसे केवल बहुसंख्यक राष्ट्रवाद का डर दिखाकर हर बार हासिल किया जा सकता है। लेकिन रेजीनगर की समझदार जनता ने यह साबित कर दिया है कि अब देश का हर नागरिक, चाहे वह किसी भी मजहब से ताल्लुक रखता हो, केवल 'मुफ्त के खोखले वादों' या 'डराने की राजनीति' के बहकावे में आने वाला नहीं है। जनता अब सड़कों के निर्माण, आधुनिक अस्पतालों, बेहतर शिक्षा और औद्योगिक पार्कों जैसे बुनियादी विकास को प्राथमिकता दे रही है। कांग्रेस अपनी इस वैचारिक और रणनीतिक हार को स्वीकार करने के बजाय, इस जनादेश को भी ₹ध्रुवीकरण का दुष्परिणाम₹ बताकर अपना पल्ला झाड़ने की कोशिश कर रही है, जो यह दशार्ता है कि पार्टी अभी भी जमीनी हकीकत को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है।

जब चुनाव आयोग और ईवीएम पर उठाए गए सवाल जनता के बीच बेअसर साबित होने लगते हैं, तो कांग्रेस अपने तरकश से 'केंद्रीय एजेंसियों के दुरुपयोग' का पुराना तीर निकाल लेती है। कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ताओं का यह लगातार आरोप रहता है कि भाजपा सरकार केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो और प्रवर्तन निदेशालय का भय दिखाकर विपक्षी नेताओं को प्रताड़ित करती है और स्वतंत्र रूप से प्रचार नहीं करने देती। लेकिन सच यह है कि ये तमाम जांच एजेंसियां माननीय अदालतों और न्यायपालिका के कड़े निर्देशों तथा प्राथमिक साक्ष्यों के आधार पर ही कानूनी कार्रवाई करती हैं। चुनाव में पराजय मिलने पर इसे जनता का साफ फैसला मानने के बजाय ₹सत्तारूढ़ दल द्वारा लोकतंत्र के दमन₹ का परिणाम घोषित कर देना कांग्रेस की आदत बन चुकी है। भाजपा और राजनीतिक विश्लेषकों का स्पष्ट मानना है कि कांग्रेस लगातार विक्टिम कार्ड खेलकर अपनी आंतरिक कमजोरियों, नेतृत्वहीनता और दिशाहीन नीति को छिपाने का प्रयास करती है, लेकिन देश की जागरूक जनता अब इस राजनीतिक ड्रामे के पीछे की असलियत को बहुत अच्छी तरह समझ चुकी है।

इन उपचुनावों के नतीजों ने न केवल कांग्रेस की सांगठनिक अक्षमता को उजागर किया है, बल्कि विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन के भीतर की गहरी दरारों को भी सरेआम कर दिया है। तमिलनाडु में सत्तारूढ़ द्रविड़ मुनेत्र कड़गम द्वारा कांग्रेस की रणनीतियों पर सरेआम सवाल उठाना और राहुल गांधी के आंदोलन से खुद को दूर रखना यह साफ करता है कि क्षेत्रीय दल अब कांग्रेस के बोझ को ढोने के मूड में नहीं हैं। पुदुचेरी की थट्टांचवडी सीट पर कांग्रेस की करारी हार ने यह साबित कर दिया है कि दक्षिण भारत में भी उसकी पकड़ लगातार ढीली हो रही है। क्षेत्रीय दलों को अब यह भली-भांति समझ आ गया है कि कांग्रेस के पास न तो कोई स्पष्ट राष्ट्रीय विजन है और ना ही भाजपा के मजबूत विकासवादी नैरेटिव का कोई व्यावहारिक तोड़। शीर्ष स्तर पर खुद को विपक्ष का इकलौता चेहरा साबित करने की राहुल गांधी की होड़ ने गठबंधन के अन्य मजबूत सहयोगियों के भीतर एक गंभीर असुरक्षा और असंतोष की भावना पैदा कर दी है, जिसका सीधा चुनावी नुकसान जमीन पर देखने को मिल रहा है। जब बाहरी बहानों की सारी सीमाएं समाप्त हो जाती हैं, तो कांग्रेस का आंतरिक तंत्र एक विशेष रक्षात्मक मुद्रा अपना लेता है, जिसका एकमात्र उद्देश्य 'गांधी परिवार' के शीर्ष नेतृत्व को किसी भी प्रकार की जवाबदेही से सुरक्षित बचाना होता है। इन उपचुनावों में भी, असम के नगांव में सिबामनी बोरा की करारी हार और बंगाल के नंदीग्राम में मिली शिकस्त के बाद, प्रदेश स्तर के नेताओं की आपसी गुटबाजी, स्थानीय स्तर पर कमजोर प्रबंधन और भीतरघात को मुख्य कारण ठहराया जाने लगा है। प्रादेशिक अध्यक्षों और स्थानीय प्रभारियों पर हार का सारा ठीकरा फोड़कर शीर्ष नेतृत्व को पूरी तरह पाक-साफ घोषित कर दिया जाता है। इस सामंती और दरबारी संस्कृति के कारण पार्टी के भीतर कभी भी ईमानदार और पारदर्शी आत्ममंथन नहीं हो पाता। जब तक पार्टी हार के वास्तविक कारणों–जैसे कार्यकर्ताओं की उपेक्षा, राष्ट्रीय विजन का अभाव और जमीनी मुद्दों से दूरी–पर खुलकर चर्चा नहीं करेगी, तब तक सुधारात्मक कदम उठा पाना पूरी तरह असंभव है।

अक्टूबर 2026 के ये उपचुनाव कांग्रेस के लिए महज एक चुनावी हार नहीं हैं, बल्कि एक गंभीर और निर्णायक चेतावनी हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा-एनडीए का 'विकसित भारत' का संकल्प, बुनियादी ढांचे का तीव्र विकास और राष्ट्रीय सुरक्षा की मजबूत नीतियां देश के मतदाताओं के दिलों में गहरा विश्वास पैदा कर चुकी हैं। जनता अब खोखली बयानबाजी, संसद से सड़क तक के ड्रामे और संवैधानिक संस्थाओं पर किए जाने वाले निराधार हमलों से पूरी तरह ऊब चुकी है। कांग्रेस को अब यह समझना ही होगा कि चुनाव सोशल मीडिया के नैरेटिव या विदेशी दौरों पर दिए गए बयानों से नहीं, बल्कि देश के आम नागरिकों के सुख-दुख में उनके साथ खड़े होने और जमीनी स्तर पर कड़ा संघर्ष करने से जीते जाते हैं। अगर कांग्रेस अब भी अपनी हर वैधानिक हार का ठीकरा चुनाव आयोग, ईवीएम, केंद्रीय एजेंसियों या परिस्थितियों पर फोड़ती रही, तो वह दिन दूर नहीं जब भारतीय राजनीति के मुख्य पटल से उसका अस्तित्व पूरी तरह अप्रासंगिक हो जाएगा। समय की मांग है कि कांग्रेस बहानों की राजनीति को छोड़कर एक जिम्मेदार और रचनात्मक विपक्ष की भूमिका निभाना सीखे।

हिन्दी दैनिक
उत्तरशक्ति
मार्गदर्शन

वन्यजीवों की घटती आबादी

-प्रियंका सौरभ

'पृथ्वी पर जीवन की विविधता मानव सभ्यता के अस्तित्व का आधार है। वन, नदियाँ, महासागर, घास के मैदान और आर्द्रभूमियाँ न केवल वन्यजीवों को आश्रय प्रदान करती हैं, बल्कि भोजन, स्वच्छ जल, जलवायु संतुलन तथा आजीविका के लिए भी आवश्यक हैं। किंतु तीव्र आर्थिक विकास, प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित दोहन और पर्यावरणीय असंतुलन ने जैव विविधता पर गंभीर संकट उत्पन्न कर दिया है। लिविंग प्लैनेट रिपोर्ट वन्यजीव आबादी में गिरावट के माध्यम से इसी संकट को उजागर करती है। यह केवल कुछ प्रजातियों के कम होने की कहानी नहीं, बल्कि प्रकृति और मानव के बीच बिगड़ते संबंधों का प्रतिबिंब है।

रिपोर्ट में दर्ज वन्यजीव आबादी में गिरावट का अर्थ पृथ्वी पर मौजूद सभी पशुओं की कुल संख्या में समान अनुपात में कमी आना नहीं है। यह मुख्यतः निगरानी की गई स्तनधारी, पक्षी, सरीसृप, उभयचर और मछली प्रजातियों की आबादी में समय के साथ हुए औसत परिवर्तन को दशार्ती है। उदाहरण के लिए, यदि किसी क्षेत्र में बाघों, पक्षियों और मछलियों की आबादी लगातार घट रही है, तो यह उनके प्राकृतिक आवास, भोजन की उपलब्धता और प्रजनन परिस्थितियों में प्रतिकूल बदलाव का संकेत हो सकता है। इसी प्रकार, मीठे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र में आबादी की तीव्र गिरावट नदियों, झीलों और आर्द्रभूमियों पर बढ़ते दबाव को दशार्ती है। हालाँकि, आबादी में गिरावट और प्रजातियों के विलुप्त होने के बीच अंतर है। कुछ प्रजातियों की संख्या घटने का अर्थ यह नहीं कि वे विलुप्त हो चुकी हैं। इसलिए वन्यजीवों की घटती आबादी को प्रकृति के स्वास्थ्य का चेतावनी संकेतक समझना चाहिए, न कि सभी जीवों के कुल विनाश का प्रत्यक्ष माप।

जैव विविधता के ह्रास का सबसे प्रमुख कारण प्राकृतिक आवासों का विनाश और विखंडन है। वनों की कटाई, कृषि भूमि का विस्तार, खनन, शहरीकरण, सड़क निर्माण तथा औद्योगिक परियोजनाएँ वन्यजीवों के प्राकृतिक आवासों को सीमित कर देती हैं। जब जंगल छोटे-छोटे हिस्सों में बँट जाते हैं, तो जानवरों की आवाजाही, प्रजनन और भोजन प्राप्त करने की क्षमता प्रभावित होती है। भारत में वन क्षेत्रों के निकट मानव बस्तियों और आधारभूत संरचनाओं का विस्तार हाथियों तथा तेंदुओं के साथ मानव-वन्यजीव संघर्ष को बढ़ा सकता है। प्राकृतिक आवासों का विनाश केवल जीवों को आश्रय से वंचित नहीं करता, बल्कि पारिस्थितिकी तंत्र की खाद्य श्रृंखला और प्राकृतिक संतुलन को भी कमजोर करता है।

प्राकृतिक संसाधनों का अतिदोहन भी जैव विविधता के लिए गंभीर चुनौती है। अत्यधिक शिकार, अवैध वन्यजीव व्यापार, अनियंत्रित मछली पकड़ना तथा लकड़ी का अत्यधिक दोहन अनेक प्रजातियों के अस्तित्व को खतरे में डालते हैं। जब किसी प्रजाति से उसकी प्राकृतिक पुनरुत्पादन क्षमता से अधिक संसाधन प्राप्त किए जाते हैं, तो उसकी आबादी में गिरावट आने लगती है। भारत में बाघों के अंगों, पैंगोलिन के शल्कों और अन्य वन्यजीव उत्पादों का अवैध व्यापार इस समस्या की गंभीरता को दशार्ता है। इसी प्रकार, समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र में अत्यधिक मत्स्य दोहन खाद्य श्रृंखला को प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त, वन्यजीव उत्पादों की बढ़ती माँग और अवैध व्यापार के अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क संरक्षण संबंधी प्रयासों को कमजोर करते हैं।

जलवायु परिवर्तन जैव विविधता के संकट को और गहरा कर रहा है। वैश्विक तापवृद्धि, वर्षा चक्र में परिवर्तन, सूखा, बाढ़, समुद्र-स्तर में वृद्धि तथा महासागरों का अम्लीकरण वन्यजीवों के अस्तित्व को प्रभावित करते हैं। तापमान में बदलाव से प्रजातियों के प्रजनन काल, प्रवास और भोजन की उपलब्धता में परिवर्तन हो सकता है। समुद्री तापमान बढ़ने से प्रवाल विरंजन की घटनाएँ बढ़ती हैं, जिससे प्रवाल भित्तियों पर निर्भर अनेक जीव प्रभावित होते हैं। हिमालयी क्षेत्रों में बदलती जलवायु पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्र और वहाँ रहने वाली प्रजातियों के लिए नई चुनौतियाँ उत्पन्न करती है। इस प्रकार, जलवायु परिवर्तन पहले से ही कमजोर पारिस्थितिकी तंत्रों पर अतिरिक्त दबाव डालता है।

प्रदूषण भी जैव विविधता के ह्रास का एक प्रमुख कारण है। औद्योगिक अपशिष्ट, कीटनाशक, रासायनिक उर्वरक, प्लास्टिक तथा सीवेज मिट्टी और जल की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। कृषि क्षेत्रों से बहकर आने वाले रसायन जल निकायों में ऑक्सीजन की कमी पैदा कर सकते हैं, जिससे मछलियों और अन्य जलीय जीवों के लिए जीवित रहना कठिन हो जाता है। प्लास्टिक प्रदूषण समुद्री कछुओं, पक्षियों और मछलियों के लिए विशेष रूप से हानिकारक है। इसके अतिरिक्त, प्रकाश और ध्वनि प्रदूषण वन्यजीवों के व्यवहार, संचार तथा प्रजनन प्रक्रियाओं को बाधित कर सकते हैं। आक्रामक विदेशी प्रजातियाँ भी स्थानीय जैव विविधता को नुकसान पहुँचाती हैं। भारत में लैंटाना जैसी आक्रामक वनस्पति कुछ वन क्षेत्रों में स्थानीय वनस्पतियों के पुनर्जनन को प्रभावित करती है और प्राकृतिक आवासों की संरचना में बदलाव लाती है। जैव विविधता संरक्षण के लिए सर्वप्रथम प्राकृतिक आवासों की सुरक्षा और पारिस्थितिकी तंत्रों के पुनर्स्थापन को प्राथमिकता देनी चाहिए। वनों, आर्द्रभूमियों, घास के मैदानों, मैंग्रोव और प्रवाल भित्तियों का संरक्षण आवश्यक है। संरक्षित क्षेत्रों के साथ वन्यजीव गलियारों का विकास किया जाना चाहिए, ताकि जानवर अलग-थलग आबादियों के बीच आवागमन कर सकें। भारत में प्रोजेक्ट टाइगर ने बाघों और उनके प्राकृतिक आवासों के संरक्षण को महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान किया है। इसी प्रकार, क्षतिग्रस्त वनों का स्थानीय प्रजातियों के माध्यम से पुनर्स्थापन तथा नदियों और आर्द्रभूमियों का पुनर्जीवन जैव विविधता की रक्षा में सहायक हो सकता है।

संरक्षण के प्रयासों को प्रभावी बनाने के लिए वैज्ञानिक निगरानी और अनुसंधान भी आवश्यक हैं। कैमरा ट्रैप, उपग्रह आधारित निगरानी, डीएनए विश्लेषण तथा नियमित जनसंख्या सर्वेक्षण से प्रजातियों की स्थिति का बेहतर आकलन किया जा सकता है। निगरानी में उन प्रजातियों और पारिस्थितिकी तंत्रों को भी शामिल करना चाहिए जिनके बारे में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध नहीं है। साथ ही, स्थानीय और आदिवासी समुदायों की भागीदारी को बढ़ावा देना चाहिए। संयुक्त वन प्रबंधन, संरक्षण आधारित आजीविका, पर्यावरण पर्यटन तथा मानव-वन्यजीव संघर्ष से प्रभावित परिवारों को उचित मुआवजा प्रदान करना संरक्षण के प्रति विश्वास बढ़ा सकता है। कृषि, उद्योग और मत्स्य पालन में सतत पद्धतियों को अपनाना, प्लास्टिक कचरे को कम करना तथा प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना भी आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त, वन्यजीव संरक्षण से संबंधित कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन, अवैध व्यापार पर नियंत्रण और विकास परियोजनाओं का निष्पक्ष पर्यावरणीय आकलन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता रूपरेखा देशों को जैव विविधता के संरक्षण, पारिस्थितिकी तंत्रों के पुनर्स्थापन और प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग के लिए साझा दिशा प्रदान करती है। इसके लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त वित्तपोषण, तकनीकी सहयोग और जवाबदेही आवश्यक हैं।

अंततः, वन्यजीव आबादी में गिरावट प्रकृति के साथ बढ़ते असंतुलन का गंभीर संकेत है। इसका प्रभाव केवल वन्यजीवों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि खाद्य सुरक्षा, जल उपलब्धता, जलवायु स्थिरता और मानव कल्याण को भी प्रभावित करता है। इसलिए संरक्षण को विकास के विरोध के रूप में नहीं, बल्कि सतत विकास की अनिवार्य शर्त के रूप में देखा जाना चाहिए। वैज्ञानिक प्रमाण, प्रभावी नीतियाँ, स्थानीय समुदायों की भागीदारी और जिम्मेदार उपभोग को एक साथ आगे बढ़ाकर ही जैव विविधता के ह्रास को रोका जा सकता है। प्रकृति की रक्षा केवल भविष्य की पीढ़ियों के प्रति हमारा दायित्व नहीं, बल्कि वर्तमान मानव समाज के अस्तित्व और समृद्धि की भी आवश्यकता है।

महँगाई की आग और रेपो रेट का ब्रेक

- डॉ. सत्यवान सौरभ

महँगाई किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए केवल बढ़ती कीमतों का सवाल नहीं है, बल्कि यह आम नागरिक की क्रयशक्ति, बचत, निवेश और जीवन-स्तर को सीधे प्रभावित करती है। जब वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें लगातार बढ़ती हैं, तो समान आय में परिवार पहले की तुलना में कम वस्तुएँ खरीद पाते हैं। ऐसी स्थिति में भारतीय रिजर्व बैंक के सामने सबसे महत्वपूर्ण चुनौती मूल्य स्थिरता और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाए रखने की होती है। इसी उद्देश्य से भारतीय रिजर्व बैंक समय-समय पर रेपो रेट में बदलाव करता है।

रेपो रेट वह दर है जिस पर भारतीय रिजर्व बैंक वाणिज्यिक बैंकों को अल्पकालिक धन उपलब्ध कराता है। जब आरबीआई रेपो रेट बढ़ाता है, तो बैंकों के लिए केंद्रीय बैंक से धन लेना महँगा हो जाता है। इसका असर धीरे-धीरे बैंक ऋण की ब्याज दरों पर पड़ता है और घरों तथा व्यवसायों के लिए कर्ज लेना महँगा हो सकता है। यही प्रक्रिया अर्थव्यवस्था में मांग को नियंत्रित करने और मांग-जनित महँगाई को कम करने में मदद करती है।

रेपो रेट बढ़ने का सबसे सीधा प्रभाव ऋण की लागत पर पड़ता है। यदि गृह ऋण, वाहन ऋण या व्यक्तिगत ऋण महँगे होते हैं, तो उपभोक्ता नए कर्ज लेने या बड़ी खरीदारी करने से बच सकते हैं। मौजूदा ऋण लेने वालों की ईएमआई भी बढ़ सकती है, जिससे उनकी मासिक आय का बड़ा हिस्सा ऋण चुकाने में चला जाता है। परिणामस्वरूप उनके पास गैर-जरूरी वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च करने के लिए कम धन बचता है। उपभोग में यह कमी कुल मांग को नियंत्रित करती है और मांग के अत्यधिक दबाव से पैदा होने वाली महँगाई को कम करने में मदद करती है। इसका प्रभाव केवल परिवारों तक सीमित नहीं रहता। कंपनियाँ भी बैंक ऋण के माध्यम से नए कारखाने, मशीनरी, भवन और कारोबारी परियोजनाएँ शुरू करती हैं। ब्याज दर बढ़ने पर परियोजनाओं की वित्तीय लागत बढ़ जाती है। कई कंपनियाँ ऐसे निवेश को कुछ समय के लिए टाल सकती हैं, जिनसे अपेक्षित लाभ ब्याज लागत की तुलना में कम हो। इससे अत्यधिक आर्थिक गतिविधि पर कुछ नियंत्रण आता है और अर्थव्यवस्था में मांग का दबाव कम हो सकता है।

रेपो रेट का एक महत्वपूर्ण प्रभाव बैंकिंग प्रणाली में ऋण वृद्धि पर भी पड़ता है। महँगे ऋण के कारण बैंक ऋण की मांग घट सकती है। यदि अर्थव्यवस्था में कर्ज बहुत तेजी से बढ़ रहा हो और उसके कारण उपभोग तथा निवेश असामान्य रूप से बढ़ रहे हों, तो मौद्रिक सख्ती उस गति को संतुलित करने का काम करती है।

महँगाई केवल वर्तमान कीमतों का विषय नहीं है; भविष्य में कीमतें कितनी बढ़ेंगी, इसकी लोगों की धारणा भी महत्वपूर्ण होती है। जब आरबीआई महँगाई के दबाव के बीच रेपो रेट बढ़ाता है, तो वह बाजार को यह संकेत देता है कि केंद्रीय बैंक मूल्य स्थिरता को प्राथमिकता दे रहा है। इससे महँगाई की अपेक्षाओं को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है। यदि व्यवसायों और उपभोक्ताओं को विश्वास हो कि केंद्रीय बैंक कीमतों को अनियंत्रित नहीं होने देगा, तो वे भविष्य की कीमतों और मजदूरी को लेकर अत्यधिक मुद्रास्फीतिकारी निर्णय लेने से बच सकते हैं।

रेपो रेट में बढ़ोतरी का एक अन्य संभावित प्रभाव रुपये की विनिमय दर पर पड़ सकता है। अपेक्षाकृत ऊँची घरेलू ब्याज दरें वित्तीय परिसंपत्तियों को अधिक आकर्षक बना सकती हैं और पूँजी प्रवाह को समर्थन मिल सकता है। इससे रुपये पर अत्यधिक अवमूल्यन का दबाव कम हो सकता है। भारत कच्चे तेल सहित कई महत्वपूर्ण वस्तुओं का आयात करता है। रुपये की कमजोरी से आयात महँगा होता है और इससे आयातित महँगाई बढ़ सकती है। इसलिए विनिमय दर में स्थिरता भी महँगाई नियंत्रण में अप्रत्यक्ष भूमिका निभा सकती है।

हालाँकि, रेपो रेट बढ़ाना कोई ऐसा उपाय नहीं है जिसका अर्थव्यवस्था पर केवल सकारात्मक प्रभाव पड़े। इसका सबसे बड़ा जोखिम आर्थिक विकास की गति पर पड़ सकता है। ऊँची ब्याज दरों से परिवारों का खर्च घट सकता है और कंपनियों का निवेश धीमा हो सकता है। इसका प्रभाव आवास, ऑटोमोबाइल, निर्माण और अन्य ब्याज-संवेदनशील क्षेत्रों पर अपेक्षाकृत अधिक पड़ सकता है। छोटे और मध्यम उद्यमों के लिए यह चुनौती और गंभीर हो सकती है, क्योंकि वे अक्सर बैंक ऋण पर अधिक निर्भर होते हैं।

दूसरी ओर, बचतकताओं को बढ़ी हुई ब्याज दरों से कुछ लाभ मिल सकता है। बैंकों द्वारा जमा पर अधिक ब्याज दिए जाने की स्थिति में सावधि जमा और अन्य बचत साधनों का आकर्षण बढ़ सकता है। इससे उपभोग की बजाय बचत को प्रोत्साहन मिलता है, जो अत्यधिक मांग को नियंत्रित करने में सहायक हो सकता है।

लेकिन भारत में महँगाई का बड़ा हिस्सा हमेशा मांग से पैदा नहीं होता। खाद्य पदार्थों की कीमतों में वृद्धि, खराब मानसून, आपूर्ति बाधाएँ, वैश्विक जिंस कीमतों में उछाल, कच्चे तेल की कीमत और भू-राजनीतिक संकट जैसी परिस्थितियाँ आपूर्ति-पक्ष की महँगाई पैदा कर सकती हैं। ऐसी स्थिति में केवल रेपो रेट बढ़ाने से समस्या का मूल समाधान नहीं होता। उदाहरण के लिए, यदि प्याज या टमाटर की कीमत आपूर्ति कम होने के कारण बढ़ रही है, तो ब्याज दर बढ़ाने से इनकी आपूर्ति तत्काल नहीं बढ़ेगी।

इसलिए भारत में महँगाई नियंत्रण की रणनीति बहुआयामी होनी चाहिए। आरबीआई को महँगाई और आर्थिक विकास के बदलते संकेतकों के आधार पर रेपो रेट में सावधानीपूर्वक बदलाव करना चाहिए। सरकार को खाद्य भंडारण, कृषि आपूर्ति श्रृंखला, परिवहन, आयात-निर्यात प्रबंधन और आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता सुधारने पर समान रूप से ध्यान देना होगा। ऊर्जा सुरक्षा के लिए कच्चे तेल के स्रोतों में विविधता लाना भी महत्वपूर्ण है। महँगाई और विकास के बीच संतुलन ही मौद्रिक नीति की असली परीक्षा है। बहुत कम ब्याज दरें लंबे समय तक बनी रहें तो अत्यधिक मांग और संपत्ति मूल्यों में असंतुलन पैदा हो सकता है, जबकि अत्यधिक ऊँची दरें आर्थिक गतिविधियों और रोजगार पर दबाव डाल सकती हैं। इसलिए रेपो रेट को महँगाई के खिलाफ एकमात्र हथियार के बजाय व्यापक आर्थिक नीति के एक महत्वपूर्ण औजार के रूप में देखना चाहिए।

अंततः रेपो रेट में बढ़ोतरी मांग-जनित महँगाई को नियंत्रित करने, ऋण वृद्धि की गति कम करने और महँगाई की अपेक्षाओं को स्थिर करने में प्रभावी हो सकती है। लेकिन भारत जैसी विशाल और विविध अर्थव्यवस्था में मूल्य स्थिरता केवल ब्याज दरों से हासिल नहीं की जा सकती। मौद्रिक नीति के साथ प्रभावी राजकोषीय नीति, बेहतर आपूर्ति प्रबंधन, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा विविधीकरण और स्पष्ट नीतिगत संवाद आवश्यक हैं। महँगाई पर लगाम ऐसी होनी चाहिए कि कीमतों का दबाव भी कम हो और विकास का पहिया भी अनावश्यक रूप से धीमा न पड़े।

साई परिवार सेवाभावी ट्रस्ट की ओर से आश्रम विद्यालय में पितृपक्ष अन्नदान कार्यक्रम संपन्न

पालघर(उत्तरशक्ति/अजीत सिंह)। साई परिवार सेवाभावी ट्रस्ट की ओर से पितृपक्ष के अवसर पर 4 अक्टूबर 2026 को मान, विक्रमगढ़ स्थित आश्रम विद्यालय में अन्नदान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पिछले 36 वर्षों से निरंतर संचालित इस सेवाभावी उपक्रम के माध्यम से जरूरतमंदों की सहायता की जा रही है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों को भोजन, नाश्ता, खेल सामग्री और शैक्षणिक सामग्री वितरित की गई।

इस सेवा अभियान की शुरूआत श्री मंगेश अंकुश रासम की संकल्पना से हुई थी। अनेक सहयोगियों और दानदाताओं के निरंतर सहयोग से यह उपक्रम 36 वर्षों का सफर पूरा कर सका है। ट्रस्ट की ओर से अब तक विभिन्न आश्रमशालाओं, अनाथालयों, वृद्धाश्रमों, मूक-बधिर विद्यालयों तथा बेघर लोगों के आश्रय केंद्रों में यथाशक्ति सहायता प्रदान की जाती रही है। इस वर्ष आयोजित कार्यक्रम में आश्रम विद्यालय के विद्यार्थियों को खेल सामग्री, खाद्य सामग्री और शैक्षणिक सामग्री प्रदान की गई। इसके साथ ही बच्चों के लिए सुबह नाश्ते में वड़ापाव तथा दोपहर में स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था की गई। इस पहल से विद्यार्थियों के चेहरे पर खुशी देखने को मिली

कार्यक्रम को सफल बनाने में अनिल वडके, संतोष बडबे, विनय सिंग, पंकज नाईक, महेश वर्मा, समीर सागवेकर, डॉ. रेवती आलवे, संदेश कनगुटकर, सौ. नंदा चौधरी, रजनी उमरसकर और सुजल राणे ने अमूल्य योगदान दिया। इस अवसर पर आश्रम विद्यालय के मुख्याध्यापक चेतन ठाकरे, तुलसीदास तांडेल, यशवंत सहित आश्रम विद्यालय के कर्मचारियों ने भी सहयोग प्रदान किया। सभी के सामूहिक प्रयासों से कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। ट्रस्ट के इस 36 वर्षों से जारी सेवाकार्य की अनेक लोगों ने सराहना की। साथ ही साई परिवार सेवाभावी ट्रस्ट के पदाधिकारियों, सदस्यों, सहयोगियों और हितचिंतकों को भविष्य में भी इसी तरह समाजसेवा के कार्य जारी रखने के लिए शुभकामनाएं दीं।

सेवा संकल्प अभियान के तहत वाडा में 217 से अधिक दिव्यांगजनों का यूडीआईडी पंजीयन

पालघर(उत्तरशक्ति)। पालघर जिला परिषद की ओर से संचालित सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत वाडा तहसील में आयोजित शिविर में 217 से अधिक दिव्यांगजनों का वऊॠ(विशिष्ट दिव्यांगता पहचान पत्र) पंजीयन किया गया। इस पहल से दिव्यांगजनों को सरकारी योजनाओं और विभिन्न शासकीय सुविधाओं का लाभ प्राप्त करने में सहायता मिलेगी। शिविर के सफल आयोजन में सहयोग देने वाले सभी डॉक्टरों, स्वास्थ्यकर्मियों, संबंधित कर्मचारियों और दिव्यांग संगठनों के पदाधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। इस अभियान के माध्यम से दिव्यांगजनों को आवश्यक प्रमाणपत्र एवं पहचान संबंधी प्रक्रिया पूरी करने का अवसर मिला। इस अवसर पर प्रहार दिव्यांग क्रांति संस्था, पालघर के जिलाध्यक्ष एवं ओम साई दत्त विकलांग सेवा संस्था के संस्थापक-अध्यक्ष सुनील गुप्ता ने शिविर के आयोजन में सहयोग देने वाले सभी लोगों का धन्यवाद किया।इस दौरान प्रहार दिव्यांग क्रांति संस्था, पालघर के जिलाध्यक्ष एवं ओम साई दत्त विकलांग सेवा संस्था के संस्थापक-अध्यक्ष सुनील गुप्ता, पालघर तहसील अध्यक्ष सुनील चुरी, डहाणू तहसील कार्याध्यक्ष सचिन तांडेल, वाडा तहसील अध्यक्ष सुनील निपुरते, वाडा तहसील सचिव हरेश्वर पाटील, तहसील कार्याध्यक्ष विनोद पावडे, ओम साई दत्त विकलांग सेवा संस्था के वाडा तालुका उपाध्यक्ष अविनाश जाधव एवं वैभव पाटील, तहसील सचिव सचिन मोरे तथा सहयोगी सुजाता ठाकरे सहित तहसील समिति के सभी पदाधिकारी व सदस्यगण उपस्थित रहे। दिव्यांगजनों के पंजीयन की इस पहल को सफल बनाने में सभी संबंधितों के योगदान की सराहना की गई। साथ ही दिव्यांगजनों को सरकारी सुविधाओं का लाभ दिलाने और उनकी समस्याओं के समाधान के लिए निरंतर सहयोग करने का संकल्प व्यक्त किया गया।

मीरा रोड में देह व्यापार के लिए महिला को भेजने का आरोप, एक महिला गिरफ्तार

मीरा-भायंदर (उत्तरशक्ति)। मीरा रोड के सिल्वर पार्क स्थित एक लॉजिंग एंड बोर्डिंग में कथित देह व्यापार के मामले में मीरा-भायंदर पुलिस के महिला अत्याचार निवारण एवं विशेष बाल संरक्षण व देखभाल प्रकोष्ठ ने कार्रवाई करते हुए एक महिला को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार, हिंदी धारावाहिकों, फोटोशूट और वेब सीरीज में काम करने वाली एक महिला को कथित रूप से अनैतिक गतिविधियों के लिए भेजे जाने की सूचना मिली थी। कार्रवाई के दौरान पीड़ित महिला को मुक्त कराकर सुरक्षा के लिए मुंबई के कांदिवली स्थित रेस्क्यू फाउंडेशन में रखा गया है। एनजीओ से मिली थी सूचना पुलिस को 8 अक्टूबर 2026 को गैर-सरकारी संगठन ह्यएक्सोडस रोड इंडिया फाउंडेशनह्ल के माध्यम से सूचना मिली थी कि रमेश कुमार नामक व्यक्ति और सोनिया नाम से पहचानी जाने वाली एक महिला कथित रूप से लड़कियों को देह व्यापार के लिए उपलब्ध करा रहे हैं। शिकायत के अनुसार, आरोपियों द्वारा व्हाट्सऐप के माध्यम से पुरुष ग्राहकों को महिलाओं की तस्वीरें भेजकर पैसों के बदले अनैतिक गतिविधियों के लिए संपर्क किया जा रहा था। पुलिस ने बिछाया जाल सूचना मिलने के बाद पुलिस ने कानूनी प्रक्रिया पूरी कर एक फर्जी ग्राहक और दो पंच गवाहों की सहायता से कार्रवाई की योजना बनाई।

उत्तरशक्ति
* संपादकः ओमप्रकाश प्रजापति
* उप संपादकः प्रेम चंद मिश्रा
*प्रबंध संपादकः डा. शेषधर बिन्द
उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है।
पत्राचार कार्यालय :
उत्तरशक्ति (हिंदी दैनिक)
मुंबई-पुणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5, ए-337 ट्रक टर्मिनल डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल ऑटाफ हिल वडाला, मुंबई-37
मो.- 9554493941
email ID- uttarshaktinews@gmail.com

ठाणे जिले में स्कूलों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के विकास के लिए 400 करोड़ का प्लान

दिशा समिति के अध्यक्ष एवं सांसद डॉ. श्रीकांत शिंदे ने जिला प्रशासन को दिए निर्देश

कल्याण (उत्तरशक्ति)। ठाणे जिले में शिक्षा, प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं और नागरिक सुविधाओं का स्तर बेहतर बनाने के लिए जिला प्रशासन ने 400 करोड़ रुपये का व्यापक विकास आराखड़ा तैयार किया है। इसके तहत जिला परिषद, महानगरपालिका और नगरपालिका क्षेत्रों के स्कूलों के आधुनिकीकरण एवं शैक्षणिक सुविधाओं के विकास के लिए करीब 300 करोड़ रुपये, जबकि प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए लगभग 100 करोड़ रुपये का नियोजन किया गया है। इसके अलावा शहरों के सौंदर्यीकरण, सार्वजनिक सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण, महिला सशक्तीकरण तथा दलित बस्तियों और झोपड़पट्टी क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं के विकास पर भी विशेष जोर दिया जाएगा। जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा समिति) की ठाणे जिलाधिकारी कार्यालय में आयोजित समीक्षा बैठक में इन योजनाओं के नियोजन, निधि की उपलब्धता और कार्यान्वयन पर चर्चा की गई। बैठक की अध्यक्षता दिशा समिति के अध्यक्ष एवं सांसद डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे ने की।

स्कूलों को बनाया जाएगा आधुनिक और स्मार्ट: जिले के स्कूलों में डिजिटल शिक्षा, इंटरनेट कनेक्टिविटी, आधुनिक कक्षाएं, स्वच्छ पेयजल, लड़के-लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालय और बेहतर रसोईघर जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराने की योजना है। सक्षम स्कूल अभियान के तहत आवश्यकता के अनुसार स्कूलों का पुनर्निर्माण कर उन्हें स्मार्ट स्कूल के रूप में विकसित किया जाएगा।

स्कूल परिसरों में सौर ऊर्जा परियोजनाएं, वर्षा जल संचयन, विद्यार्थियों के लिए बेहतर विश्राम कक्ष तथा शैक्षणिक एवं प्रेरणादायी चित्रों से सजी दीवारें विकसित करने पर भी जोर दिया जाएगा। प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण (पीएम पोषण) योजना के तहत विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण भोजन उपलब्ध कराने के लिए आदर्श रसोईघर बनाने के निर्देश भी दिए गए हैं।

स्कूलों में शैक्षणिक गुणवत्ता सुधारने के लिए अनुभवी शिक्षकों के साथ सरकारी और निजी क्षेत्र के शिक्षकों का सहयोग लिया जाएगा। प्रत्येक स्कूल की अद्यतन जानकारी रखने, हर वर्ष उसका मूल्यांकन करने और जरूरत के अनुसार सुधार करने की व्यवस्था विकसित की जाएगी। जिला परिषद, महानगरपालिकाओं और नगरपालिकाओं के माध्यम से आवश्यक निधि जुटाकर आधुनिकीकरण के कार्य नियोजित तरीके से पूरे करने का लक्ष्य रखा गया है।

शहरों के सौंदर्यीकरण और नागरिक सुविधाओं पर जोर: शहरों में प्रमुख सड़कों का सौंदर्यीकरण, आकर्षक प्रकाश व्यवस्था, तालाबों और उद्यानों का विकास तथा सार्वजनिक स्थानों को बेहतर बनाने की योजना है। नागरिकों के लिए आधुनिक सार्वजनिक शौचालय बनाए जाएंगे। उनकी नियमित सफाई और उचित रखरखाव सुनिश्चित करने पर भी ध्यान दिया जाएगा।

उद्यानों और सार्वजनिक स्थलों पर व्यायाम की सुविधाएं, साइकिल ट्रैक, बच्चों के खेलने के लिए स्थान, आधुनिक जिम, पुस्तकालय और विद्यार्थियों के लिए अध्ययन कक्ष विकसित करने की योजना बनाई गई है।

पैदल चलने वालों की सुरक्षा के लिए अच्छे फुटपाथ, पर्याप्त रोशनी और जरूरी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। महिलाओं को कौशल प्रशिक्षण देकर रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के साथ ही उनकी गतिविधियों के लिए महिला भवन बनाने का भी प्रस्ताव है।

भिवंडी में पॉलिश कंपनी में जोरदार धमाका, चार मजदूर झुलसे; दो की हालत गंभीर

भिवंडी। भिवंडी तालुका के सोनाले गांव स्थित लक्ष्मी कंपाउंड में शनिवार, 10 अक्टूबर की सुबह कलर पॉलिश कंपनी में अचानक हुए विस्फोट के बाद आग लग गई। इस हादसे में चार मजदूर झुलसकर घायल हो गए, जिनमें से दो की हालत गंभीर बताई जा रही है। सभी घायलों को उपचार के लिए निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घायलों की पहचान शहाजहान शेख, विनय कुमार वर्मा, नंदकिशोर यादव और नितिन कुमार के रूप में हुई है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, कंपनी में पॉलिश करने वाली मशीन में अचानक विस्फोट होने से आग भड़क उठी। घटना के बाद कंपनी में अफरा-तफरी मच गई और वहां काम कर रहे मजदूरों में दहशत फैल गई। घटना की सूचना मिलते ही भिवंडी अग्निशमन दल की दो दमकल गाड़ियां मौके पर पहुंचीं।

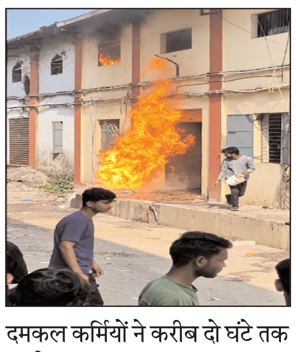

दमकल कर्मियों ने करीब दो घंटे तक कड़ी मशक्कत कर आग पर काबू पाया। आग बुझाने के बाद राहत कार्य पूरा किया गया। हादसे की जानकारी मिलने पर भिवंडी तालुका पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस विस्फोट के वास्तविक कारणों का पता लगाने में जुटी है। साथ ही, कंपनी में सुरक्षा व्यवस्था और दुर्घटना से जुड़ी अन्य परिस्थितियों की भी जांच की जा रही है।

निर्माण स्थल पर 58 वर्षीय मजदूर की मौत, सुरक्षा व्यवस्था पर उठे सवाल

मजदूरों का आरोप—कंपनी नहीं देती सुरक्षा उपकरण, हादसे के बाद मदद के लिए भी भटकना पड़ता है

कल्याण। कल्याण पूर्व के आडिवली-ढोकली क्षेत्र में स्थित माउंटेन ड्रीम सिटी निर्माण स्थल पर एक 58 वर्षीय मजदूर की मौत हो गई। मृतक की पहचान रामजीबाबू कन्हैयालाल यादव के रूप में हुई है। इस घटना के बाद निर्माण स्थल पर मजदूरों की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सवाल खड़े हो रहे हैं। मानपाडा पुलिस स्टेशन में दर्ज आकस्मिक मृत्यु की रिपोर्ट के अनुसार, यह घटना 9 अक्टूबर को रात करीब 10:37 बजे सामने आई। हादसा आडिवली-ढोकली, कल्याण पूर्व स्थित माउंटेन ड्रीम सिटी कंस्ट्रक्शन साइट पर हुआ। घटना के बाद मानपाडा पुलिस ने मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए डोंबिवली के शास्त्रीनगर अस्पताल भेजा गया।

सुरक्षा उपकरण नहीं मिलने का मजदूरों का आरोप: नाम उजागर नहीं करने की शर्त पर कुछ मजदूरों ने आरोप लगाया कि निर्माण कंपनी की ओर से मजदूरों को पर्याप्त सुरक्षा उपकरण उपलब्ध नहीं कराए जाते हैं। उनका कहना है कि निर्माण स्थल पर काम करने वाले मजदूरों की सुरक्षा को लेकर गंभीरता बरती जानी चाहिए, ताकि इस तरह की घटनाओं को रोका जा सके।

मजदूरों ने यह भी आरोप लगाया कि किसी दुर्घटना के बाद प्रभावित मजदूरों और उनके परिवारों की मदद के लिए कोई संगठन आगे नहीं आता। इस घटना के बाद से संबंधित लोग पुलिस स्टेशन के चक्कर काटने को मजबूर हैं। मजदूरों का आरोप है कि गरीब मजदूरों की शिकायतों पर उचित ध्यान नहीं दिया जाता, जबकि ऐसे मामलों में विकासकों को राहत मिलती है। **मजदूरों की सुरक्षा की जिम्मेदारी कौन लेगा ?:** इस घटना ने निर्माण स्थलों पर काम करने वाले मजदूरों की सुरक्षा, उन्हें आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराने और दुर्घटना के बाद पीड़ित परिवार को सहायता मिलने जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को सामने ला दिया है। अब सवाल यह है कि निर्माण स्थलों पर सुरक्षा नियमों का पालन सुनिश्चित करने और मजदूरों को न्याय दिलाने के लिए संबंधित विभाग कब ठोस कदम उठाएंगे।

समाजवादी पार्टी मुलुंड द्वारा मनाई गयी श्रद्धेय मुलायम सिंह यादव की चौथी पुण्यतिथि

मुंबई। समाजवादी पार्टी की मुलुंड विधानसभा इकाई की ओर से पार्टी के संस्थापक एवं उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्रद्धेय नेताजी स्वर्गीय मुलायम सिंह यादव की चौथी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं ने नेताजी के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी और उनके विचारों एवं समाजवादी सिद्धांतों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम का आयोजन मुलुंड विधानसभा अध्यक्ष जीवन लाल यादव के नेतृत्व में नागरिक सभा हॉल, जवाहरलाल नेहरू रोड, मुलुंड पश्चिम में मुलुंड रेलवे स्टेशन के बगल में किया गया।

कार्यक्रम में ईशान मुंबई जिला अध्यक्ष शशिकांत यादव, जिला प्रमुख महासचिव दीनानाथ यादव, जिला उपाध्यक्ष रवींद्रनाथ यादव, राम कैलाश सरोज, विनोद शर्मा, सुशील यादव, सभाजीत यादव, अखिलेश यादव, वीरेंद्र यादव, शशि, विजय यादव, धीरेंद्र यादव, डॉ. जे.एस. यादव सिंह तथा प्रभाकर यादव सहित पार्टी के अनेक पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सभा में वक्ताओं ने नेताजी मुलायम सिंह यादव के राजनीतिक एवं सामाजिक योगदान को याद करते हुए कहा कि उन्होंने जीवनभर समाज के कमजोर, वंचित और पिछड़े वर्गों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। उनके विचार और समाजवादी आंदोलन के प्रति समर्पण सदैव कार्यकताओं को प्रेरित करते रहेंगे। इस श्रद्धांजलि सभा में सैकड़ों कार्यकताओं की उपस्थिति ने नेताजी के प्रति पार्टी कार्यकताओं की श्रद्धा और सम्मान को प्रदर्शित किया। कार्यक्रम का समापन नेताजी के आदर्शों पर चलने तथा समाजवादी विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने के संकल्प के साथ हुआ।

प्रधानमंत्री के जन्मदिन के उपलक्ष में एसएम खान द्वारा मुफ्त चिकित्सा शिविर का आयोजन

मुंबई। भारत के लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मुख्यमंत्री तथा प्रधानमंत्री के पद पर 25 वर्ष पूर्ण करने तथा जन्मदिन के उपलक्ष में पूरे महाराष्ट्र में एक महीना तक चलाए जा रहे सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत आज भारतीय जनता पार्टी अल्पसंख्यक मोर्चा के महाराष्ट्र उपाध्यक्ष एसएम खान ने जोगेश्वरी वसोर्वा विधानसभा के आनंद नगर स्थित अपने कार्यालय के पास मेडिकल शिविर का आयोजन किया, जिसमें स्थानीय नागरिकों के लिए मेडिकल चेकअप, चश्मा वितरण तथा मुफ्त दवाइयों का वितरण किया गया।महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के आदेशानुसार एक महीने का कार्यक्रम पूरे महाराष्ट्र में सेवा पखवाड़ा के रूप में चलाया जा रहा है।

एसएम खान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस द्वारा जनहित में किए जा रहे कार्यों से देश की आम आवाम पूरी तरह से संतुष्ट है। देश और प्रदेश आज विकास की नई ऊंचाइयों की तरफ बढ़ रहा है।

एसएम खान द्वारा आयोजित इस शिविर में हजारों लोगों ने लाभ उठाया। इस अवसर पर सुनील दुबे, आरके दुबे, आरिफ हयात पंकज शर्मा राजीव चौहान, सरिता ढागे, जन्नतुनिषा नसरीन के अलावा बड़ी संख्या में पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

ओबीसी कृति समिति के लंबित प्रस्तावों की त्रुटियां दूर कर एनसीबीसी दिल्ली भेजेगा विभाग

मंत्रालय में सचिव आप्पासो धुलाज के साथ हुई अहम बैठक में सकारात्मक चर्चा, प्रस्तावों को जल्द आगे बढ़ाने का दिया आश्वासन

मुंबई(उत्तरशक्ति)। महाराष्ट्र में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) समाज की लंबित मांगों और विभिन्न जातियों को केंद्रीय ओबीसी सूची में शामिल करने से संबंधित प्रस्तावों को गति देने के लिए महाराष्ट्र ओबीसी कृति समिति ने प्रयास तेज कर दिए हैं। इसी कड़ी में समिति के प्रतिनिधिमंडल ने मंत्रालय में ओबीसी बहुजन कल्याण विभाग के सचिव आप्पासो धुलाज (आईएएस) के साथ महत्वपूर्ण बैठक की। बैठक में लंबित प्रस्तावों में मौजूद तकनीकी त्रुटियों को दूर करने तथा उन्हें आगे की आवश्यक कार्रवाई के लिए राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग (एनसीबीसी), नई दिल्ली को शीघ्र भेजने के मुद्दे पर विस्तार से चर्चा हुई। बैठक के दौरान सचिव आप्पासो धुलाज ने आश्वासन दिया कि विभाग स्तर पर लंबित प्रस्तावों की समीक्षा कर आवश्यक त्रुटियों को दूर करने की कार्रवाई की जायेगी। साथ ही जरूरी औपचारिकताएं पूरी कर प्रस्तावों को समयबद्ध तरीके से एनसीबीसी, नई दिल्ली भेजने के लिए प्रयास किए जाएंगे। इस आश्वासन से समिति के प्रतिनिधियों में संतोष व्यक्त किया गया। इस महत्वपूर्ण पहल की शुरूआत 5 अक्टूबर 2026 को हुई थी। महाराष्ट्र ओबीसी कृति समिति के वरिष्ठ संरक्षक एवं पूर्व प्राचार्य पी. आर. बडगुजर तथा वरिष्ठ संरक्षक एस. एम. बडगुजर ने मंत्रालय पहुंचकर सचिव आप्पासो धुलाज से मुलाकात की थी। इस दौरान उन्होंने केंद्रीय ओबीसी सूची में समावेशन से संबंधित लंबित प्रस्तावों की स्थिति,

प्रशासनिक देरी और इससे प्रभावित समाजों की समस्याओं की जानकारी दी। साथ ही, मामले की गंभीरता को देखते हुए विशेष समीक्षा बैठक आयोजित करने की मांग की। दोनों वरिष्ठ संरक्षकों के प्रयासों के बाद सचिव ने मामले पर संज्ञान लेते हुए 7 अक्टूबर 2026 को सुबह 11 बजे मंत्रालय में समीक्षा बैठक निर्धारित की। निर्धारित समय पर आयोजित बैठक में मंत्रालय के उपसचिव डॉ. वसंत माने, संबंधित कक्ष अधिकारी तथा अन्य प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे। महाराष्ट्र ओबीसी कृति समिति की ओर से वरिष्ठ संरक्षक एस. एम. बडगुजर, भूषण कडेकर, विकास संसारे, आषाद शेख, रवींद्र गोलांडे और मनमत लोकेवार सहित समिति के पदाधिकारी एवं सामाजिक प्रतिनिधि शामिल हुए। बैठक में प्रतिनिधिमंडल ने विभिन्न जातियों और समाजों को केंद्रीय ओबीसी सूची में शामिल करने से संबंधित लंबित प्रस्तावों का मुद्दा उठाया। प्रतिनिधियों ने बताया कि कुछ प्रस्ताव दस्तावेजों की कमी और तकनीकी त्रुटियों के कारण शासन स्तर पर लंबित हैं। उन्होंने संबंधित प्रस्तावों की कमियों को दूर कर प्रक्रिया में तेजी लाने की मांग की।

प्रतिनिधिमंडल की ओर से प्रस्तुत मुद्दों और दस्तावेजों पर चर्चा के बाद सचिव आप्पासो धुलाज ने सकारात्मक रुख अपनाया। उन्होंने भरोसा दिलाया कि विभाग स्तर पर आवश्यक त्रुटियों को दूर करने और संबंधित औपचारिकताओं को पूरा करने की दिशा में कार्रवाई की जाएगी, ताकि प्रस्तावों को आगे की प्रक्रिया के लिए राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग, नई दिल्ली को भेजा जा सके। बैठक सकारात्मक और सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई। महाराष्ट्र ओबीसी कृति समिति ने उम्मीद जताई कि विभाग के इस आश्वासन से वर्षों से लंबित प्रस्तावों को गति मिलेगी और संबंधित समाजों की केंद्रीय ओबीसी सूची में समावेशन की मांग को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी। अब सभी की निगाहें प्रस्तावों में आवश्यक सुधार और उन्हें एनसीबीसी तक भेजने की आगामी प्रशासनिक प्रक्रिया पर टिकी हैं।

प्यासा ऑर्केस्ट्रा बार पर पुलिस का छापा, गुप्त कमरे से 10 महिलाओं समेत कुल 16 महिलाएं मुक्त

भायंदर पूर्व में महिला अत्याचार निवारण प्रकोष्ठ की कार्रवाई; मैनेजर, कैशियर समेत 12 लोग गिरफ्तार, अवैध शराब और अन्य सामग्री जब्त

मीरा-भायंदर (उत्तरशक्ति)। भायंदर पूर्व के नवघर रोड स्थित प्यासा ऑर्केस्ट्रा बार में मीरा-भायंदर पुलिस के महिला अत्याचार निवारण एवं विशेष बाल संरक्षण व देखभाल प्रकोष्ठ ने छापेमारी कर कुल 16 महिलाओं को मुक्त कराया। इनमें से 10 महिलाएं बार के भीतर बने एक कथित गुप्त कमरे में मिलीं। पुलिस के अनुसार, इस कमरे में हवा के पर्याप्त आवागमन की व्यवस्था नहीं थी, जिससे महिलाओं की सुरक्षा और स्वास्थ्य को खतरा हो सकता था। इस मामले में बार के मैनेजर, कैशियर और अन्य कर्मचारियों समेत कुल 12 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। अश्लील इशारों और नियमों के उल्लंघन की मिली थी सूचना पुलिस को 8 अक्टूबर 2026 को सूचना मिली थी कि प्यासा ऑर्केस्ट्रा बार में महिला वेट्रेस के माध्यम से कथित रूप से अश्लील इशारे करवाकर ग्राहकों को आकर्षित किया जा रहा है। साथ ही, बार में निर्धारित संख्या से अधिक महिला वेट्रेस रखने और अन्य नियमों के उल्लंघन की भी शिकायत मिली थी। सूचना की पुष्टि और आवश्यक कानूनी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद महिला अत्याचार निवारण एवं विशेष बाल संरक्षण व देखभाल प्रकोष्ठ की टीम ने कार्रवाई की योजना बनाई। रात 10:20 बजे पुलिस ने मारा छापा पुलिस टीम ने 8 अक्टूबर की रात करीब 10:20 बजे भायंदर पूर्व के नवघर रोड स्थित प्यासा ऑर्केस्ट्रा बार पर छापा मारा। पुलिस के अनुसार, बार में कम रोशनी के बीच मंच पर महिलाएं प्रस्तुति दे रही थीं। आरोप है कि कुछ महिलाएं अश्लील इशारे कर ग्राहकों को

आकर्षित कर रही थीं और बार के कर्मचारी उन्हें प्रोत्साहित कर रहे थे। पुलिस के पहुंचने पर एक महिला वेट्रेस और उसके साथ मौजूद एक व्यक्ति पास के दरवाजे से भागने की कोशिश करते दिखाई दिए। हालांकि, पुलिसकर्मियों ने महिला पुलिसकर्मियों की सहायता से उन्हें रोक लिया। गुप्त कमरे में मिलीं 10 महिलाएं छापेमारी के दौरान मंच पर सात महिलाएं मौजूद थीं। इसके बाद पुलिस टीम उस दिशा में पहुंची, जहां से महिला वेट्रेस के भागने की कोशिश करने की बात सामने आई थी। वहां तलाशी लेने पर एक छिपा हुआ कमरा मिला। कमरे का दरवाजा खोलने पर पुलिस को अंदर 10 महिलाएं मिलीं। पुलिस के मुताबिक, उस कमरे में हवा के पर्याप्त आवागमन की व्यवस्था नहीं थी, जिससे वहां मौजूद महिलाओं के जीवन और स्वास्थ्य को खतरा उत्पन्न हो सकता था। कार्रवाई के दौरान कुल 16 महिलाओं को मुक्त कराया गया। पुलिस अब बार में महिलाओं को रखने की परिस्थितियों और नियमों के उल्लंघन से जुड़े पहलुओं की जांच कर रही है। मैनेजर और कैशियर समेत 12 लोग गिरफ्तार पुलिस ने इस मामले में कुल 12 लोगों को गिरफ्तार किया है। इनमें एक मैनेजर, एक कैशियर, दो स्टीवर्ड, सात वेटर और एक पुरुष संगीतकार शामिल हैं।

स्वामीः शरद फागूराम प्रजापति, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति द्वारा सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, यूनिट क्रमांक 4, तल मजला, एन.के. इंडस्ट्रियल स्टेट, आरे रोड, प्रवासी इंडस्ट्रियल एस्टेट, जवल, गेट क्रमांक 2, गोरेगांव (पूर्व), मुंबई-400063, महाराष्ट्र से मुदित एवं के-4, रूम नं. 8, ग्राउंड फ्लोर न्यू समता सहकारी को.ऑ. हां. सोसाइटी, एमएमआरडीए कॉलोनी कंजूरमार्ग (वेस्ट), जिला मुंबई- 400078, महाराष्ट्र से प्रकाशित। RNI NO. MAHHIN/2018/76092 * संपादक- ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति, समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के लिए उत्तरदाई तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद मुंबई न्यायालय के अधीन होंगे।
पत्राचार कार्यालयः मुंबई-पुणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5 ए-337 ट्रैक टर्मिनल, डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल, ऑटाफ हिल, वडाला मुंबई -37, मो.- 9554493941 email ID- uttarshaktinews@gmail.com

शराब की दुकान पर मारपीट और हत्या के प्रयास के मामले में दो आरोपी गिरफ्तार

शाहगंज, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। शाहगंज थाना क्षेत्र में शराब की दुकान पर मारपीट, तोड़फोड़ और हत्या के प्रयास के मामले में शाहगंज पुलिस ने दो वांछित आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान फरहान पुत्र शरीफ और मोहम्मद रईस पुत्र मोहम्मद अकबर, निवासी एराकियाना, कस्बा शाहगंज, जनपद जौनपुर के रूप में हुई है।

पुलिस के अनुसार, 9 अक्टूबर को शाहगंज-जौनपुर मार्ग स्थित कंपोजिट अंग्रेजी शराब की दुकान पर विवाद के दौरान मारपीट हुई थी। आरोप है कि सेल्समैन द्वारा विवाद रोकने का प्रयास करने पर कुछ लोगों ने दुकान में घुसकर रॉड, लाठी और शराब की बोतलों से हमला कर दिया। बीच-बचाव करने पहुंचे लोगों के साथ भी मारपीट की गई, जिसमें आलोक सिंह समेत कई लोगों को चोटें आईं।

आरोपियों पर दुकान में शराब की

बोतलें तोड़ने, बाहर खड़ी मोटरसाइकिलों को क्षतिग्रस्त करने, पेट्रोल निकालकर दुकान में आग लगाने का प्रयास करने तथा जान से मारने की धमकी देने का भी आरोप है।

मामले में पीड़ित पक्ष की तहरीर पर थाना शाहगंज में मुकदमा अपराध संख्या 352/2026 के तहत भारतीय न्याय संहिता की विभिन्न धाराओं में प्राथमिकी दर्ज की गई थी। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जौनपुर के निर्देश पर चलाए जा रहे अभियान 'ऑपरेशन समग्र' के तहत पुलिस ने 10 अक्टूबर को दोनों वांछित आरोपियों को उनके घर से गिरफ्तार किया।

गिरफ्तारी करने वाली टीम में प्रभारी निरीक्षक दिनेश कुमार सिंह, उपनिरीक्षक ओम प्रकाश पांडेय, हेड कांस्टेबल आशीष कुमार राठी और कांस्टेबल शशांक पांडेय शामिल रहे। पुलिस के अनुसार, दोनों आरोपियों के विरुद्ध आवश्यक विधिक कार्रवाई की जा रही है।

महाराजा अग्रसेन जयंती 11 अक्टूबर को देशभर में हर्षोल्लास से मनाई जाएगी: मोहम्मद अरशद खान

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। महाराजा अग्रसेन उद्योग व्यापार मंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष, समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव एवं जौनपुर सदर के पूर्व विधायक मोहम्मद अरशद खान ने कहा कि महाराजा अग्रसेन जयंती 11 अक्टूबर को पूरे देश में हर्षोल्लास, सामाजिक सद्भाव और आपसी भाईचारे के साथ मनाई जाएगी।

शनिवार, 10 अक्टूबर को पीडीए भवन, लड्डन कॉलोनी, कटघरा, जौनपुर में आयोजित प्रेस ब्रीफिंग के दौरान उन्होंने कहा कि महाराजा अग्रसेन भारतीय इतिहास के महान, न्यायप्रिय एवं प्रजावत्सल शासकों में से एक थे। उनके आदर्श न्याय, समानता, जनकल्याण, ईमानदारी और सामाजिक सहयोग पर आधारित थे। उन्होंने व्यापार एवं उद्यम को प्रोत्साहित करते हुए समाज को परिश्रम, नैतिकता और परस्पर सहयोग की प्रेरणा दी। उनके विचार आज भी एक समृद्ध और समरस समाज के निर्माण में प्रासंगिक हैं।

मोहम्मद अरशद खान ने कहा कि महाराजा अग्रसेन के आदर्श किसी एक जाति, धर्म या समुदाय तक सीमित नहीं हैं। ईमानदार व्यापार, न्यायपूर्ण व्यवहार, आपसी विश्वास और सामाजिक सहयोग जैसे मूल्य सभी के लिए प्रेरणादायक हैं। इन आदर्शों को अपनाकर व्यापारी और उद्यमी देश की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

उन्होंने कहा कि महाराजा अग्रसेन जयंती केवल उत्सव मनाने का अवसर नहीं, बल्कि उनके विचारों को अपने जीवन में अपनाने और समाज के प्रति जिम्मेदारियों का

निर्वहन करने का संकल्प लेने का दिन है। व्यापार में ईमानदारी, ग्राहकों के प्रति जिम्मेदारी, श्रमिकों के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार और जरूरतमंदों की सहायता करना ही उनके आदर्शों के प्रति सच्चा सम्मान होगा।

पीडीए भवन में होगा जयंती समारोह: महाराजा अग्रसेन उद्योग व्यापार मंडल के तत्वावधान में रविवार, 11 अक्टूबर 2026 को पीडीए भवन, लड्डन कॉलोनी, कटघरा, जौनपुर में महाराजा अग्रसेन जयंती समारोह आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर महाराजा अग्रसेन के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी जाएगी। साथ ही उनके जीवन, विचारों, न्यायप्रियता, ईमानदार व्यापार और सामाजिक सहयोग के सिद्धांतों पर चर्चा की जाएगी। कार्यक्रम के माध्यम से सर्वधर्म समभाव, आपसी भाईचारे, सामाजिक एकता और राष्ट्र निर्माण का संदेश दिया जाएगा।

मोहम्मद अरशद खान ने देशभर के व्यापारियों, उद्यमियों, दुकानदारों, सामाजिक संगठनों तथा सभी धर्मों एवं समुदायों के नागरिकों से अपील की कि वे महाराजा अग्रसेन जयंती को उत्साहपूर्वक मनाएं और उनके आदर्शों को अपनाकर समाज में सद्भाव, विश्वास एवं सहयोग को मजबूत करें।

उन्होंने कहा कि महाराजा अग्रसेन उद्योग व्यापार मंडल का मूल संकल्प ह्लसर्वधर्म समभाव, ईमानदार व्यापार, सामाजिक सहयोग और राष्ट्र निर्माणह्व है। संगठन व्यापारियों एवं उद्यमियों के हितों की रक्षा के साथ-साथ सामाजिक एकता, नैतिक व्यावसायिक संस्कृति और जनकल्याण के लिए निरंतर प्रयास करता रहेगा।

विद्यार्थी अपनी प्रतिभा से पीयू का मान बढ़ाएं: कुलपति

पूर्वांचल विश्वविद्यालय में 'केम फेस्ट 2026' का भव्य आयोजन, वैज्ञानिक सोच और नवाचार को मिला बढ़ावा

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग में केमिकल कम्युनिकेशन सोसाइटी

की ओर से एमएससी के विद्यार्थियों के लिए 'केम फेस्ट 2026' का आयोजन किया गया। 'विज्ञान और कल्पनाशीलता का संगम' थीम पर आधारित इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों की वैज्ञानिक प्रतिभा, रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. राकेश कुमार सिंह ने कहा कि विद्यार्थी विश्वविद्यालय में उपलब्ध शैक्षणिक सुविधाओं का लाभ उठाकर अपनी प्रतिभा और कौशल से विश्वविद्यालय का मान बढ़ाएं। वैज्ञानिक सोच, प्रयोगात्मक ज्ञान और नवाचार के माध्यम से विद्यार्थी समाज एवं राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं।

अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. प्रमोद कुमार यादव ने विज्ञान शिक्षा के साथ रचनात्मकता और कौशल विकास के महत्व पर जोर दिया। वहीं, रसायन विज्ञान विभागाध्यक्ष प्रो. प्रमोद कुमार ने विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय में उपलब्ध शैक्षणिक संसाधनों एवं वैज्ञानिक उपकरणों का अधिकतम उपयोग कर अपनी शोध क्षमता विकसित करने के लिए प्रेरित किया।

डॉ. नितेश जायसवाल ने रसायन विज्ञान के क्षेत्र में करियर की संभावनाओं की जानकारी देते हुए शोध एवं विकास, औषधि निर्माण, औद्योगिक रसायन विज्ञान, पर्यावरण संरक्षण और हरित रसायन जैसे क्षेत्रों में उपलब्ध अवसरों पर प्रकाश डाला।

केम फेस्ट के अंतर्गत विभिन्न तकनीकी एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें विद्यार्थियों को अपनी वैज्ञानिक प्रतिभा, रचनात्मकता, टीम भावना और नेतृत्व क्षमता प्रदर्शित करने का अवसर मिला।

इस अवसर पर प्रो. मिथिलेश सिंह, डॉ. अजीत सिंह, डॉ. दिनेश कुमार वर्मा, डॉ. विजय शंकर पांडेय, डॉ. नीरज अवस्थी, डॉ. आशीष वर्मा सहित विभाग के अन्य शिक्षक एवं संबंधित सदस्य उपस्थित रहे।

महिला छात्रावास में छात्राओं को सिखाए तनाव प्रबंधन के प्रभावी तरीके

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर के महिला छात्रावास में तनाव प्रबंधन एवं उससे निपटने की प्रभावी रणनीतियों पर महिला छात्रावास में विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. राकेश कुमार सिंह के दिशा-निर्देश पर आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त छात्रावासों की छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ मनोचिकित्सक डॉ. विनोद कुमार वर्मा ने छात्राओं को तनाव के कारणों, मानसिक स्वास्थ्य के महत्व तथा दैनिक जीवन की चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने के उपायों की जानकारी दी। उन्होंने तनावपूर्ण परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखने और सकारात्मक सोच अपनाने के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर व्यावहारिक मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष एवं वेलनेस सेंटर के संयोजक प्रो. अजय प्रताप सिंह ने कहा कि मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। स्वस्थ जीवन के लिए दोनों के बीच संतुलन आवश्यक है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और तनाव प्रबंधन की समझ बेहद जरूरी है। कार्यक्रम का संयोजन व्यावहारिक मनोविज्ञान विभाग की सहायक आचार्य एवं अतिरिक्त मुख्य वार्डन महिला डॉ. अन्नू त्यागी ने किया। आयोजन में डॉ. जया शुक्ला, डॉ. निमिषा यादव एवं डॉ. कृष्णा सिंह का विशेष योगदान रहा।

वृद्धाश्रम में 97 बुजुर्गों की हुई आंखों की जांच, लायंस क्लब क्षितिज ने दिखाई संवेदनशीलता

एडीएम ने किया नेत्र परीक्षण शिविर का उद्घाटन, बुजुर्गों के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का दिया संदेश

प्रियेश गुप्ता रूद्रा

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। समाजसेवा और मानवीय संवेदना की मिसाल पेश करते हुए लायंस क्लब क्षितिज जौनपुर की ओर से वृद्धाश्रम में नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन जौनपुर के अपर जिलाधिकारी (एडीएम) ने किया। इस दौरान वृद्धाश्रम में रह रहे बुजुर्गों की आंखों की जांच कर उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का संदेश दिया गया।

शिविर में कुल 97 बुजुर्गों का नेत्र परीक्षण किया गया। शिविर का मुख्य उद्देश्य बुजुर्गों में आंखों से संबंधित समस्याओं की पहचान करना तथा उन्हें बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के प्रति जागरूक करना रहा। क्लब की इस पहल से वरिष्ठ नागरिकों के स्वास्थ्य और देखभाल के प्रति सामाजिक जिम्मेदारी का संदेश भी दिया गया।

कार्यक्रम में लायंस क्लब क्षितिज के संस्थापक अध्यक्ष लायन शशांक सिंह रानू, एमजेएफ लायन दिलीप सिंह, एमजेएफ लायन प्रदीप सिंह, लायन अजीत सोनकर, लायन संजय गुप्ता, लायन डॉ. योगेंद्र सिंह और एमजेएफ लायन अतुल सिंह सहित क्लब के अन्य सदस्य उपस्थित रहे। सभी सदस्यों ने शिविर के आयोजन में सक्रिय सहभागिता निभाई और सेवा कार्य को सफल बनाने में योगदान दिया।

लायंस क्लब क्षितिज जौनपुर की इस पहल को बुजुर्गों के स्वास्थ्य संरक्षण और उनके प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने की दिशा में सराहनीय प्रयास माना जा रहा है। शिविर के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि वरिष्ठ नागरिकों की देखभाल और उन्हें बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

मेडिकल कॉलेज में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम, विशेषज्ञों ने दिया स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का संदेश

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर 10 अक्टूबर को उमानाथ सिंह स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय, जौनपुर के मानसिक रोग विभाग की ओर से जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मानसिक स्वास्थ्य के महत्व, तनाव से बचाव और समय पर विशेषज्ञ से परामर्श लेने के प्रति लोगों को जागरूक किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाविद्यालय के प्रधानाचार्य प्रो. डॉ. आरबी कमल ने कहा कि मानसिक स्वास्थ्य समग्र स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण हिस्सा है। पढ़ाई, प्रतियोगी परीक्षाओं, नौकरी और पारिवारिक अपेक्षाओं के कारण लोग मानसिक तनाव का सामना कर रहे हैं। मानसिक समस्याओं को कमजोरी या सामाजिक कलंक नहीं समझना चाहिए, बल्कि जरूरत पड़ने पर बिना किसी संकोच के विशेषज्ञ की सलाह लेनी चाहिए।

चिकित्सा अधीक्षक डॉ. विनोद कुमार ने मरीजों के उपचार में भावनात्मक सहयोग और संवेदनशील व्यवहार की आवश्यकता पर जोर दिया। वहीं, कम्युनिटी मेडिसिन विभागाध्यक्ष डॉ. अनुज सिंह ने नियमित व्यायाम, योग, संतुलित आहार और पर्याप्त नींद को स्वस्थ जीवनशैली का आधार बताया। उन्होंने शारीरिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए Google Fit एप्लिकेशन की उपयोगिता भी बताई।

मानसिक रोग विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद वर्मा ने कहा कि मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना और मानसिक रोगों से जुड़े सामाजिक संकोच को दूर करना आवश्यक है। उन्होंने तनाव, चिंता, अवसाद और नींद संबंधी समस्याओं के शुरूआती लक्षणों को पहचानकर समय पर उपचार कराने की अपील की। सीनियर रेजिडेंट डॉ. ईश दत्त पांडेय ने भी मानसिक समस्याओं पर खुलकर चर्चा करने और जरूरत पड़ने पर विशेषज्ञ की मदद लेने पर बल दिया। महाविद्यालय प्रशासन ने आमजन से अपील की कि मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से पीड़ित व्यक्ति उपचार के लिए मेडिकल कॉलेज की ओपीडी कक्ष संख्या 201 में संपर्क कर सकते हैं।

इस अवसर पर महाविद्यालय के चिकित्सक, चिकित्सा शिक्षक, कर्मचारी तथा एमबीबीएस के छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

महुली की 80वीं ऐतिहासिक रामलीला में रामजन्म लीला का भव्य मंचन

जय श्रीराम के जयघोष से गूंजा रामलीला परिसर, भक्तिमय हुआ माहौल

महुली,सोनभद्र (उत्तरशक्ति)। विंढमगंज थाना क्षेत्र के महुली में आयोजित 80वीं ऐतिहासिक श्रीरामलीला के दूसरे दिन भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव की लीला का भव्य मंचन किया गया। रामजन्म का प्रसंग मंच पर साकार होते ही पूरा रामलीला परिसर भक्तिमय हो उठा। रामायण की चौपाइयों, भक्ति संगीत और कलाकारों के शानदार अभिनय ने श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। इस दौरान परिसर जय श्रीराम के जयघोष से गूंजता

रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ रामायण की आरती से हुआ। इसके बाद भगवान शिव की आरती और नृत्य प्रस्तुति के पश्चात रामजन्म लीला का मंचन किया गया। कलाकारों ने रावण के अत्याचारों से त्रस्त देवताओं की पुकार और भगवान विष्णु के श्रीराम के रूप में अवतार लेने के प्रसंग को जीवंत किया। महाराज दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ के बाद भगवान श्रीराम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के जन्म का दृश्य प्रस्तुत किया गया।

रामलीला के व्यास दिलीप कुमार कन्नौजिया ने रामायण की चौपाइयों के सस्वर पाठ और भावपूर्ण व्याख्या से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। लीला के माध्यम से धर्म की स्थापना, अधर्म के अंत और मानवता के कल्याण का संदेश दिया गया। रामलीला के तीसरे दिन ताड़का वध लीला का मंचन किया जाएगा। इसमें ऋषि विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा के लिए भगवान श्रीराम और लक्ष्मण के वनगमन तथा ताड़का वध के प्रसंग को दर्शाया जाएगा।

इस अवसर पर रामलीला मंडली के डायरेक्टर विश्वनाथ शर्मा, समिति अध्यक्ष अरविंद जायसवाल, कोषाध्यक्ष अमित कुमार कन्नौजिया, दिलगज राम कन्नौजिया सहित सैकड़ों श्रद्धालु उपस्थित रहे।

साइबर अपराध से मानसिक स्वास्थ्य पर खतरा, जागरूकता ही बचाव का प्रभावी माध्यम: प्रो.राकेश कुमार सिंह

डॉ.अनुप गिरधर बोले-सोशल मीडिया पर सूचना साझा करने से पहले करें सत्यता की जांच

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर शनिवार को दत्तोपंत ठेंगड़ी विधि संस्थान के सभागार में साइबर अपराधों के मनोवैज्ञानिक प्रभावों पर संगोष्ठी आयोजित की गई। व्यावहारिक मनोविज्ञान विभाग, वेलनेस सेंटर एवं साइबर क्लब के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में डिजिटल सुरक्षा, ऑनलाइन धोखाधड़ी और साइबर उत्पीड़न से बचाव के उपायों पर चर्चा की गई।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. राकेश कुमार सिंह ने कहा कि साइबर अपराध तेजी से बढ़ रहे हैं और इनका लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि डिजिटल दुनिया में परिचित चेहरे या जानी-पहचानी आवाज पर भी आंख मूंदकर भरोसा नहीं करना चाहिए। साइबर अपराधी विद्यार्थियों की फीस से लेकर लोगों की जीवनभर की जमा पूंजी तक को निशाना बना रहे हैं। ऐसे में साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूकता बेहद जरूरी है।

मुख्य अतिथि एवं साइबर क्राइम विशेषज्ञ डॉ. अनुप गिरधर ने कहा कि साइबर ठगी, ऑनलाइन उत्पीड़न और भ्रामक सूचनाएं लोगों में तनाव, डर और मानसिक परेशानी बढ़ा रही हैं। डिजिटल माध्यमों पर भ्रामक सामग्री के जरिए लोगों की सोचने-समझने और निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। उन्होंने इसे 'ब्रेन हैकिंग' की संज्ञा देते हुए सोशल मीडिया पर किसी भी सूचना, वीडियो या संदेश को साझा करने से पहले उसकी सत्यता जांचने की अपील की।कार्यक्रम के संयोजक प्रो. अजय प्रताप सिंह ने विषय प्रवर्तन किया। आयोजन सचिव डॉ. अन्नू त्यागी ने साइबर अपराध और काउंसलिंग पर विचार व्यक्त किए। व्यावहारिक मनोविज्ञान विभाग के विद्यार्थियों ने डॉ. जाह्नवी श्रीवास्तव के निर्देशन में नाटक प्रस्तुत कर जागरूकता का संदेश दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. दिग्विजय सिंह राठौर ने किया तथा डॉ. जाह्नवी श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर प्रो. मनोज मिश्र, प्रो. अविनाश, प्रो. सौरभ पाल, प्रो. गिरिधर मिश्र, प्रो. विनोद कुमार, डॉ. दिव्येंदु मिश्र, डॉ. सुरेंद्र यादव सहित विभिन्न विभागों के शिक्षक एवं विद्यार्थी मौजूद रहे।

जेपीएल 2026: शाहगंज स्ट्राइकर्स और मड़ियाहूं चैलेंजर्स ने मारी बाजी

कुलपति बोले- खेल युवाओं में अनुशासन, नेतृत्व और टीम भावना विकसित करने का सशक्त माध्यम

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के एकलव्य स्टेडियम में आयोजित जौनपुर प्रीमियर लीग (जेपीएल) 2026 में रोमांचक मुकाबले देखने को मिले। प्रतियोगिता में शाहगंज स्ट्राइकर्स ने जौनपुर पैंथर्स को शिकस्त दी, वहीं मड़ियाहूं चैलेंजर्स ने जफराबाद चैलेंजर्स को हराकर शानदार जीत दर्ज की।

पहले मुकाबले में शाहगंज स्ट्राइकर्स ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 10 ओवर में छह विकेट पर 76 रन बनाए। जवाब में जौनपुर पैंथर्स की टीम 68 रन पर ऑलआउट हो गई। शाहगंज स्ट्राइकर्स की जीत में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले फरहान हक को मैन ऑफ द मैच चुना गया। उन्होंने 17 गेंदों पर 23 रन बनाए। कुलपति प्रो. आर. के. सिंह ने उन्हें ट्रॉफी देकर सम्मानित किया।

दूसरे मुकाबले में जफराबाद चैलेंजर्स की टीम 10 ओवर में 50 रन पर सिमट गई। लक्ष्य का पीछा करने उतरी मड़ियाहूं चैलेंजर्स ने तीन विकेट के नुकसान पर 7.3 ओवर में 51 रन बनाकर जीत हासिल कर ली। शिवम यादव को उनके शानदार

प्रदर्शन के लिए मैन ऑफ द मैच चुना गया। उन्होंने 13 गेंदों पर 17 रन बनाए। अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. प्रमोद कुमार यादव ने उन्हें ट्रॉफी प्रदान की।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. आर. के. सिंह ने कहा कि जौनपुर प्रीमियर लीग युवाओं की खेल प्रतिभाओं को निखारने और उन्हें अपनी क्षमता प्रदर्शित करने का सशक्त मंच है। इस तरह के आयोजन जनपद में खेल संस्कृति को बढ़ावा देने के साथ खिलाड़ियों को आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करते हैं।

उन्होंने कहा कि खेलों से विद्यार्थियों में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, टीम भावना और आपसी सहयोग जैसे गुणों का विकास होता है। विश्वविद्यालय शिक्षा, शोध एवं नवाचार के साथ खेलों को प्रोत्साहित करने और युवाओं को अपनी प्रतिभा निखारने के अवसर उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है।

लायंस क्लब जौनपुर रॉयल के रक्तदान शिविर में 19 रक्तवीरों ने किया रक्तदान

मानव सेवा के संकल्प के साथ आयोजित हुआ रक्तदान महादान कार्यक्रम, निवर्तमान अध्यक्ष संजीव साहू सम्मानित

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। मानव सेवा और जनकल्याण की भावना को साकार करते हुए लायंस क्लब जौनपुर रॉयल की ओर से रक्तदान महादान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शिविर में 19 रक्तवीरों ने स्वेच्छा से रक्तदान कर जरूरतमंद मरीजों की सहायता के लिए सराहनीय पहल की।

कार्यक्रम के संयोजक लायन संतोष अग्रहरि ने आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने लोगों को रक्तदान के प्रति जागरूक करते हुए इस पुनीत अभियान से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर क्लब के निवर्तमान अध्यक्ष लायन संजीव साहू ने कहा कि रक्तदान मानवता की सेवा का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। जरूरतमंद मरीजों को समय पर रक्त उपलब्ध कराकर उनका जीवन बचाने में रक्तदाता अहम भूमिका निभाते हैं। उन्होंने समाज के लोगों से स्वैच्छिक रक्तदान के लिए आगे आने की अपील की।

कार्यक्रम के दौरान रक्तदान एवं जनसेवा के क्षेत्र में योगदान के लिए निवर्तमान अध्यक्ष लायन संजीव साहू को ब्लड बैंक की ओर से सम्मानित किया गया। वहीं, क्लब के सदस्य लायन अजय मोदनवाल ने स्वयं रक्तदान कर दूसरों के सामने प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में क्लब के सदस्यों ने बढ़-चढ़कर सहभागिता की और समाजसेवा के कार्यों को निरंतर जारी रखने का संकल्प लिया। लायंस क्लब जौनपुर रॉयल ने कहा कि रक्तदान जैसे अभियान समाज में सहयोग, संवेदना और मानवता की भावना को मजबूत करते हैं। क्लब ने आमजन से अपील की कि वे रक्तदान के प्रति जागरूक बनें और जरूरतमंदों की सहायता के लिए आगे आएं।

रिपोर्ट लिखाने पहुंचे बीजेपी कार्यकर्ता को थाने में पीटा-घसीटा, विधायक गोलू शुक्ला के 400 समर्थकों ने थाने का किया घेराव

-प्रणित नरेंद्र तिवारी

इंदौर (उत्तर शक्ति)। इंदौर के एरोड्रम थाने में शुक्रवार रात भाजपा कार्यकर्ता पं. जयदीप दुबे और उनके जीजा पंकज चौबे के साथ मारपीट करने और घसीटने का मामला सामने आया है। घटना की जानकारी मिलते ही विधायक गोलू शुक्ला के 400 से ज्यादा समर्थक थाने पहुंच गए। उन्होंने संबंधित पुलिस कर्मियों पर कार्रवाई की मांग करते हुए नारेबाजी शुरू कर दी। हंगामा बढ़ने पर एडिशनल डीसीपी सुमित केरकट्टा पहुंचे। उन्होंने देर रात टीआई वेदेंद्र सिंह कुशवाह समेत 7 पुलिस कर्मियों को सस्पेंड कर दिया। इसके बाद विरोध शांत हुआ जयदीप दुबे के मुताबिक, शुक्रवार शाम 5:30 बजे घर के पास अचानक ब्रेक लगाने की बात पर एक स्कूटी सवार ने उनके साथ गाली-गलौज और मारपीट की।

बीच-बचाव करने आए उनके परिवार (पत्नी व बच्चों) के साथ भी अभद्रता, मारपीट, छेड़छाड़ की गई और जान से मारने की धमकी दी गई। इसके बाद वे एफआईआर लिखाने थाने पहुंचे थे दुबे के अनुसार, थाने पहुंचने पर उन्होंने पुलिस कर्मियों को घटना और सीने में दर्द होने की जानकारी दी, लेकिन उनकी शिकायत पर तत्काल कार्रवाई नहीं हुई। उनका आरोप है कि पुलिसकर्मी बार-बार कार्रवाई का आश्वासन देते रहे।

दुबे ने बताया कि रात 11 बजे वे अपने जीजा पंकज चौबे के साथ दोबारा थाने पहुंचे। चौबे भाजपा मंडल उपाध्यक्ष हैं। आरोप है कि शिकायत दर्ज कराने के दौरान टीआई ने उनसे कहा कि वे ज्यादा नेतागीरी कर रहे हैं और विधायकों से फोन लगवा रहे हैं।एरोड्रम क्षेत्र में शुक्रवार शाम 5:30 बजे एक विवाद से शुरू हुआ घटनाक्रम शनिवार सुबह 5 बजे तक चला। फरियादी के साथ मारपीट, विधायक गोलू शुक्ला का फोन करने, थाने पहुंचने, मेडिकल कराने, पुलिसकर्मियों पर मारपीट के आरोपों के बाद रात करीब 1 बजे समर्थकों ने एरोड्रम थाने का घेराव कर हंगामा किया। देर रात थाना प्रभारी समेत 7 पुलिसकर्मियों को सस्पेंड किया गया। इसके बाद मामला शांत हुआ। इस तरह विवाद से लेकर कार्रवाई तक करीब 12 घंटे तक घटनाक्रम चलता रहा।

पीएनबी ने 'प्रथम सतत वित्त नेतृत्व शिखर सम्मेलन 2026' में वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र को एक मंच दिया

मुंबई। भारत के अग्रणी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में से एक, पंजाब नेशनल बैंक ने द्वारका, नई दिल्ली स्थित अपने कॉर्पोरेट कार्यालय में तीसरे पीसीएफएफ इंडिया एक्सेलेरेटर सत्र के साथ प्रथम सतत वित्त नेतृत्व शिखर सम्मेलन 2026 की मेजबानी की। इस शिखर सम्मेलन में नियामक निकायों, बैंकों, वित्तीय संस्थानों, कॉर्पोरेट्स और सतत विकास संगठनों के वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया, ताकि भारत को एक सतत और जुझारू अर्थव्यवस्था की ओर ले जाने में वित्त की महत्वपूर्ण भूमिका पर विचार-विमर्श किया जा सके। यह शिखर सम्मेलन पीएनबी की सतत विकास और स्थिरता की यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इसने ज्ञान के आदान-प्रदान, सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने और सतत वित्त के व्यावहारिक दृष्टिकोण तलाशने के लिए एक सहयोगी मंच प्रदान किया। सम्मेलन में मुख्य रूप से जलवायु जोखिम, जिम्मेदार बैंकिंग, वित्तपोषित उत्सर्जन, प्रकृति से जुड़े जोखिमों और वित्तीय निर्णय लेने की प्रक्रिया में स्थिरता के पहलुओं को शामिल करने पर चर्चा की गई। इस कार्यक्रम में भारतीय रिजर्व बैंक, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम वित्तीय पहल, पार्टनरशिप फॉर कार्बन अकाउंटिंग फाइनेंशियल, सिडबी, नैबफिड, एक्ज़िम बैंक, आईएफएससीए, आईआईएफसीएल, सार्वजनिक व निजी क्षेत्र के बैंकों, कॉर्पोरेट्स और वित्तीय एवं सतत विकास पारिस्थितिकी तंत्र के अन्य प्रमुख हितधारकों के वरिष्ठ प्रतिनिधियों की भागीदारी देखी गई।

उद्घाटन सत्र को पीएनबी की मुख्य समूह जोखिम अधिकारी सुश्री मौसमी मजूमदार ने संबोधित किया, जिन्होंने पीएनबी की सतत विकास यात्रा और भविष्य की रूपरेखा भी प्रस्तुत की।

कानपुर के श्री रामानुग्रह आश्रम में बहेगी श्रीमद्भागवत कथा की अमृत धारा, 18 से 24 अक्टूबर तक होगा आयोजन

कानपुर। शहर के ईश्वरीगंज क्षेत्र स्थित श्री रामानुग्रह आश्रम, बिठूर में गोलोकवासी श्रीमती डॉ. सी. पुष्पाकरण जी की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा का भव्य आयोजन किया जाएगा। यह धार्मिक अनुष्ठान 18 अक्टूबर 2026, रविवार से 24 अक्टूबर 2026, शनिवार तक परम पूज्य श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर स्वामी श्री विनय स्वरूपानंद सरस्वती जी महाराज की अध्यक्षता में संपन्न होगा। कथा व्यास श्रीधाम वृंदावन, मथुरा के प्रख्यात संत श्री वत्स कृष्ण कांत अवस्थी जी महाराज अपने श्रीमुख से श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत कथा का अमृत रसपान कराएंगे। कथा प्रतिदिन अपराह्न 2 बजे से सायं 6 बजे तक आयोजित होगी। सात दिनों तक चलने वाले इस आध्यात्मिक आयोजन में श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत के दिव्य प्रसंगों, भक्ति, ज्ञान और धर्म के संदेशों का श्रवण करने का अवसर मिलेगा। इस संबंध में जानकारी देते हुए कथा के आयोजक एवं श्री रामानुग्रह आश्रम के परमाध्यक्ष महामंडलेश्वर स्वामी श्री विनय स्वरूपानंद सरस्वती जी महाराज ने बताया कि 25 अक्टूबर 2026, रविवार को संत सम्मेलन एवं विशाल भंडारे के साथ इस धार्मिक अनुष्ठान की पूर्णाहुति होगी। इस अवसर पर कानपुर सहित विभिन्न क्षेत्रों से अनेक संत-महात्माओं, विलक्षण महापुरुषों एवं विशिष्ट जनों के सम्मिलित होने की संभावना है। महामंडलेश्वर स्वामी जी महाराज ने कानपुरवासियों एवं मुंबई में रहने वाले अपने अनुयायियों से आयोजन में पूर्ण मनोयोग से सहभागिता करने की अपील की है। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं से इस धार्मिक आयोजन की जानकारी जन-जन तक पहुंचाने का आग्रह भी किया, ताकि अधिक से अधिक लोग श्रीमद्भागवत कथा का लाभ प्राप्त कर सकें।

दुनिया भर में आजमाई हुई प्री-पेंटेड स्टील टेक्नोलॉजी को भारत में पेश

मुंबई। टाटा स्टील कलर्स प्राइवेट लिमिटेड ने पूरी दुनिया में अपनी पहचान बनाने वाले कलरकोटेड रेंज के प्री-पेंटेड स्टील प्रोडक्ट्स को आज भारत में लॉन्च करने की घोषणा की। इसके साथ ही, कंपनी देश के बढ़ते इंफ्रास्ट्रक्चर सेक्टर में यूरोप का दशकों पुराना अनुभव, अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और बेहतरीन बिल्डिंग-एनवेलप सॉल्यूशंस लेकर आई है। भारत की जरूरतों के मुताबिक तैयार की गई एडवांस्ड कोटिंग टेक्नोलॉजी से बनी कलरकोटेड मजबूती, खूबसूरती, ज्यादा गर्मी सहने की क्षमता और सस्टेनेबिलिटी का शानदार मेल है, जिसे भारत में अलग-अलग तरह की इमारतों की जरूरत को पूरा करने के लिए, बनाया गया है। कलरकोटेड कुदरती दुनिया की हमेशा कायम रहने वाली खूबसूरती से प्रेरित है, जो खास तौर पर चुने गए बेहतरीन रंगों और भरोसेमंद प्रदर्शन को साथ मिलाकर ऐसी इमारतें तैयार करता है जो देखने में आकर्षक होने के साथ-साथ बेहद मजबूत भी होती हैं। समय और उमस भरे मौसम के लिए खास तौर पर डिज़ाइन की गई इसकी एडवांस कोटिंग टेक्नोलॉजी रंगों और चमक को लंबे समय तक बरकरार रखती है, साथ ही इसमें जंग और किनारों के कटने से सुरक्षा, खरोंच से बचाव और लंबे समय तक आकर्षक लुक जैसी खूबियां भी है। अलग-अलग रंगों और फिनिश की एक शानदार रेंज उपलब्ध होने से आर्किटेक्ट्स और डेवलपर्स को डिजाइन के मामले में पूरी आजादी मिलती है। ळरखड्ड इसका उत्पादन जमशेदपुर में अत्याधुनिक सुविधाओं वाली इकाई में तैयार किए जाने वाले कलरकोटेड प्रोडक्ट्स को देश-विदेश के बाजारों में भेजा जाएगा और उनकी बिक्री की जाएगी, जिससे दुनिया की बेहतरीन टेक्नोलॉजी और विशेषज्ञता अब स्थानीय स्तर पर उपलब्ध हो सकेगी।

आज से विक्रोली पार्क साइट में भव्य रामलीला महोत्सव का शुभारंभ

मुंबई। श्री रामलीला उत्सव समिति के तत्वावधान में विक्रोली पार्क साइट स्थित छत्रपति श्री शिवाजी महाराज मैदान में 60वें भव्य रामलीला महोत्सव का आयोजन 11 अक्टूबर से 21 अक्टूबर तक किया जा रहा है। समिति के अध्यक्ष प्रभाकर चंद्रशेखर शुक्ल के नेतृत्व में आयोजित इस धार्मिक एवं सांस्कृतिक महोत्सव को लेकर तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। शनिवार को रामलीला प्रांगण में गंगाजल का छिड़काव कर शुद्धिकरण किया गया।

समिति की ओर से जारी कार्यक्रम के अनुसार, रामलीला मंचन के चौथे दिन 14 अक्टूबर, बुधवार को दोपहर 3 बजे भगवान श्रीराम की भव्य बारात एवं नगर दर्शन के लिए शोभायात्रा निकाली जाएगी। और 18 अक्टूबर को श्रीरामचरितमानस एवं महाकाव्य महाभारत पर आधारित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन होगा। वहीं, 20 अक्टूबर को विजयदशमी,दशहरा के अवसर पर आधुनिक तकनीक से रावण के पुतले का दहन किया जाएगा। इसके साथ ही श्रीरामराज्याभिषेक की विशेष प्रस्तुति भी आकर्षण का केंद्र रहेगी। महोत्सव के अंतिम दिन 21 अक्टूबर को दोपहर 1 बजे से भोजपुरी सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत बिरहा का जंगी मुकाबला आयोजित किया जाएगा। 21 अक्टुबर इसी दिन शाम 5 बजे से अखिल भारतीय विराट कवि सम्मेलन का आयोजन होगा, जिसमें अपने काव्य पाठ से लोहा मनवाने वाले कवि गण अपनी रचनाओं के माध्यम से श्रोताओं का मनोरंजन करेंगे। समिति के सचिव दिवाकर मिश्रा,कोषाध्यक्ष एस पी सिंह, मीडिया प्रभारी आदेश कुमार मिश्र ने समस्त श्रद्धालुओं एवं क्षेत्रवासियों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर रामलीला महोत्सव की शोभा बढ़ाएं। आयोजन को सफल बनाने के लिए समिति के सभी कार्यकारिणी सदस्य एवं पदाधिकारी सक्रिय रूप से जुटे हुए हैं।

अंताक्षरी प्रतियोगिता में प्रथम रहा प्रियांशु

उदयपुरवाटी। कस्बे की टैगोर फाउंडेशन स्कूल में शनिवार के अंतिम कालांश में अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें बच्चों ने अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए मीनिंग्स की बौछार कर दी और सबसे ज्यादा मीनिंग्स के सही जवाब देकर विजेता भी बने। विजय हुए विद्यार्थियों को कार्यक्रम के आयोजक रहे डॉक्टर राजेंद्र कुमावत ने मौके पर उनको शानदार मोमेंटो देकर सम्मानित भी किया।

स्वास्थ्य चर्चा के बाद आयोजित हुई इस अंताक्षरी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर प्रियांशु सैनी दूसरे पर सरस सैनी व तीसरे स्थान पर रूपिका सैनी रही इसके अतिरिक्त चेतन सैनी व हिमांशु सैनी ने भी अपनी एकग्रचितता का परिचय दिया जिस पर सांत्वना पुरस्कार देकर उनका भी मान बढ़ाया जाएगा। कार्यक्रम के दौरान स्कूल के सुनील सैनी,एस एम मीणा,संगीता सैनी नेहा सैनी अंतिमा सहित पूरा स्टाफ उपस्थित रहा।

श्रीराम को वापस लाने के संकल्प के साथ भरत ने किया वनगमन, भावुक हुई रामलीला

वाराणसी (उत्तरशक्ति)। श्री आदि रामलीला लाट भैरव वरुणा संगम काशी के तत्वावधान में शुक्रवार को भरत वन प्रस्थान एवं भरत घंडइल पार की लीला का सजीव मंचन किया गया। लीला में भरत के त्याग, पश्चाताप और भगवान श्रीराम के प्रति अटूट भ्रातृ प्रेम का भावपूर्ण चित्रण किया गया।

ननिहाल से अयोध्या लौटने पर भरत को जब अपने ज्येष्ठ भ्राता भगवान श्रीराम के वनवास का समाचार मिला तो वह स्तब्ध रह गए। माता कैकेयी द्वारा मांगे गए दो वरदानों की जानकारी मिलने पर भरत गहरे पश्चाताप में डूब गए और श्रीराम को वापस अयोध्या लाने का संकल्प लेकर अयोध्यावासियों के साथ वन की ओर चल पड़े।

भरत भगवान श्रीराम के राज्याभिषेक की समस्त सामग्री लेकर वनगमन करते हैं। उनके साथ तीनों माताएं, गुरु वशिष्ठ, भाई शत्रुघ्न और मंत्रीगण भी मौजूद रहते हैं। भ्रातृ प्रेम की मिसाल पेश करते हुए भरत रथ छोड़कर नंगे पांव दुर्गम मार्ग पर आगे बढ़ते हैं। पीलीकोठी स्थित धनेसरा तालाब पर घंडइल पार की लीला में भरत मां गंगा को प्रणाम कर नदी पार करते हैं। वहीं, भरत के प्रेम और संकल्प को देखकर देवलोक के देवता चिंतित हो जाते हैं और देवी सरस्वती से भरत की बुद्धि बदलने की प्रार्थना करते हैं। झाल-मंजीरों की गूंज के बीच कीर्तन मंडली ने प्रसंगानुसार रामायण की चौपाइयों का गायन किया। इसके बाद तेलियाना स्थित ऋषि भारद्वाज के आश्रम में लीला को विश्राम दिया गया। अगले दिन कज्जाकपुरा स्थित रामबाग में भरत मनावन की लीला का मंचन होगा। इस अवसर पर लीला समिति के प्रधानमंत्री कन्हैयालाल यादव, व्यास दयाशंकर त्रिपाठी, सहव्यास पंकज त्रिपाठी सहित मनोज यादव, केवल कुशवाहा, गोविंद विश्वकर्मा, संतोष साहू, शिवम अग्रहरि, रामप्रसाद मौर्य, चंद्रिका प्रसाद, मुरलीधर पांडेय, श्याम सुंदर, कामेश्वर पाठक, जयप्रकाश राय, ओमप्रकाश आदि उपस्थित रहे।

सोमैया विद्याविहार युनिवर्सिटी ने मनाया 5 वां दीक्षांत समारोह, विभिन्न विषयों में अकादमिक उत्कृष्टता का जश्न मनाया

मुंबई। सोमैया विद्याविहार युनिवर्सिटी (एसवीयू) ने अपने कैंपस के गार्गी प्लाजा में 5 वां दीक्षांत समारोह आयोजित किया। जहां विभिन्न विषयों में पढ़ाई पूरी करने वाले छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों का जश्न मनाया गया। यह समारोह छात्रों में पेशेवर उत्कृष्टता, व्यापक सोच और मजबूत चरित्र को बढ़ावा देने की युनिवर्सिटी की प्रतिबद्धता को दशार्ता है, ताकि वे अपनी पढ़ाई पूरी करके प्रोफेशनल और सामाजिक जीवन की ओर बढ़ सकें। समारोह में सोमैया विद्याविहार युनिवर्सिटी के चांसलर समीर सोमैया, वाइस-चांसलर प्रो. अजय कपूर, रजिस्ट्रार प्रो. नंदकुमार गिलके के साथ-साथ फैकल्टी सदस्य, डिग्री पाने वाले छात्र और उनके परिवार शामिल हुए। भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के डिपार्टमेंट ऑफ मिलिट्री अफेयर्स के पूर्व एडिशनल सेक्रेटरी, वाइस एडमिरल अतुल आनंद (सेवानिवृत) ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। युनिवर्सिटी के बहु-आयामी शैक्षणिक माहौल को दशार्ते हुए, मुख्य दीक्षांत समारोह के बाद नौ शैक्षणिक समूहों में फेकल्टी के अनुसार डिग्री वितरण समारोह आयोजित किए गए। डिग्री पाने वाले छात्र मैनेजमेंट, इंजीनियरिंग और टेक्नोलॉजी, एजुकेशन, धर्मा स्टडीज, कॉमर्स एंड बिजनेस स्टडीज, बेसिक एंड एप्लाइड साइंसेज, ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज; म्युजिक एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स और स्पोर्ट्स जैसे क्षेत्रों से थे।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए सोमैया विद्याविहार युनिवर्सिटी के चांसलर समीर सोमैया ने कहा, युनिवर्सिटी का उद्देश्य छात्रों को न सिर्फ प्रोफेशनल सफलता के लिए तैयार करना, बल्कि उन्हें स्वतंत्र रूप से सोचने, जिम्मेदारी से काम करने और समाज में सार्थक योगदान देने के लिए भी तैयार करना है। जैसे-जैसे हमारे ग्रेजुएट अपनी जिंदगी के अगले पड़ाव की ओर बढ़ रहे हैं, हमें उम्मीद है कि वे उत्कृष्टता, जिज्ञासा और चरित्र जैसे उन मूल्यों को आगे बढ़ाएंगे जो सोमैया विद्याविहार युनिवर्सिटी की नींव हैं। अपने पांचवें दीक्षांत समारोह के साथ, सोमैया विद्याविहार युनिवर्सिटी ने बहु-आयामी शिक्षा, बौद्धिक खोज और चरित्र-आधारित लर्निंग के लिए अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत करना जारी रखा, साथ ही उन ग्रेजुएट्स को भी सराहा जो विभिन्न पेशों, समुदायों और राष्ट्रीय विकास के उभरते क्षेत्रों में योगदान देने के लिए तैयार हैं।

स्नातक एवं शिक्षक निर्वाचन-2026 को लेकर मतदान अधिकारियों का प्रशिक्षण संपन्न

जिला निर्वाचन अधिकारी ने निष्पक्ष और पारदर्शी मतदान सुनिश्चित करने के दिए निर्देश

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। वाराणसी खंड स्नातक एवं शिक्षक निर्वाचन-2026 की तैयारियों के तहत जिला निर्वाचन अधिकारी सैमुअल पाल एन की उपस्थिति में शनिवार को मतदान अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान निर्वाचन प्रक्रिया को सुचारु, निष्पक्ष एवं पारदर्शी ढंग से संपन्न कराने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। प्रशिक्षण में प्रथम मतदान अधिकारियों और पीठासीन अधिकारियों को मतदान प्रक्रिया, उनके दायित्वों तथा भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निदेर्शों की विस्तार से जानकारी दी गई। अधिकारियों को निर्वाचन संबंधी नियमों का पालन करते हुए अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करने के लिए प्रशिक्षित किया गया। जिला निर्वाचन अधिकारी सैमुअल पाल एन ने निर्देश दिया कि सभी अधिकारी प्रशिक्षण में दी गई जानकारी का भली-भांति अध्ययन कर लें, ताकि निर्वाचन के दौरान किसी प्रकार की कठिनाई न हो। उन्होंने निर्वाचन प्रक्रिया को निर्धारित नियमों के अनुरूप संपन्न कराने तथा निष्पक्षता बनाए रखने पर जोर दिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) परमानंद झा, मुख्य विकास अधिकारी नरेंद्र बहादुर सिंह, परियोजना निदेशक के.के. पांडेय, जिला विकास अधिकारी मीनाक्षी देवी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

दमकल कर्मियों की बहादुरी से टला बड़ा हादसा, तीन घंटे में आग पर पाया काबू

वाराणसी (उत्तरशक्ति)। रथयात्रा-महमूरगंज स्थित बनारस स्वर्ण कला केन्द्र में शनिवार सुबह भीषण आग लगने से हड़कंप मच गया। सूचना मिलते ही दमकल विभाग की पांच गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और करीब तीन घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया। दमकल कर्मियों की तत्परता से आग आसपास के भवनों तक फैलने से रोक ली गई। राहत की बात यह रही कि घटना में कोई जनहानि नहीं हुई।

सुबह 5:35 बजे आग लगने की सूचना मिलने के महज एक मिनट बाद दमकल की टीमें रवाना हो गईं। बंद शटरों के कारण राहत कार्य में बाधा आई, जिसके बाद बहु-आपदा मोचन वाहन की मदद से ताले काटकर अंदर प्रवेश किया गया। आग से भूतल की कृत्रिम छत और लकड़ी के सामान को नुकसान पहुंचा। धुआं प्रथम तल तक पहुंचने पर दमकल कर्मियों ने श्वास यंत्र पहनकर धुआं बाहर निकाला और आग बुझाने की कार्रवाई की। अभियान के दौरान कुछ दमकल कर्मियों की उंगलियों में आंशिक चोटें भी आईं, लेकिन उन्होंने उपचार के बाद अपना अभियान जारी रखा। सुबह 8:35 बजे आग पर पूरी तरह काबू पा लिया गया। दमकल कर्मियों के साहस और कर्तव्यनिष्ठा की स्थानीय लोगों एवं व्यापारियों ने सराहना की।

बलरामपुर में गरजे योगी, बोले अयोध्या आस्था की धरती, अखिलेश आए तो मैं भी तैयार

नान बाबू चौहान

उतरौला/बलरामपुर (उत्तरशक्ति)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को बलरामपुर जिले के उतरौला क्षेत्र स्थित बिलरिया में विशाल जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने पिछली सरकारों पर जमकर निशाना साधा और अपनी सरकार की उपलब्धियां गिनाईं। मुख्यमंत्री ने बलरामपुर को 803 करोड़ रुपये की 78 परियोजनाओं की सौगात देने की घोषणा करते हुए जिले में स्वास्थ्य, शिक्षा, सड़क और कानून-व्यवस्था के क्षेत्र में हुए विकास कार्यों का उल्लेख किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि वर्ष 2017 से पहले उत्तर प्रदेश में हर दूसरे-तीसरे दिन दंगे होते थे। माफिया और गुंडे सत्ता के संरक्षण में फलते-फूलते थे। बहन-बेटियों का बाजार जाना मुश्किल था और व्यापारियों से रंगदारी वसूली जाती थी। उन्होंने

कहा कि पिछली सरकारों के कार्यकाल में दंगाइयों को संरक्षण मिलता था, जबकि उनकी सरकार दंगाइयों की गर्मी शांत करने का काम करती है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज उत्तर प्रदेश में कानून का राज है। कोई माफिया गरीबों की जमीन पर अवैध कब्जा नहीं कर सकता और न ही महिलाओं के सम्मान के साथ खिलवाड़ करके बच सकता है। सरकार अपराध और अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई कर रही है। अयोध्या को लेकर राजनीतिक बयानबाजी के बीच मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अयोध्या उनके लिए राजनीति का विषय नहीं, बल्कि पूजनीय और आस्था की धरती है। अखिलेश यादव की चुनौती का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि यदि समाजवादी पार्टी के नेता अयोध्या से चुनाव लड़ने आते हैं, तो वह भी वहां से चुनाव लड़ने के लिए तैयार हैं। मुख्यमंत्री के इस बयान को आगामी विधानसभा चुनाव से पहले प्रदेश की राजनीतिक सरगर्मी से जोड़कर देखा जा रहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कभी पिछड़े और बाढ़ प्रभावित जिले के रूप में पहचाने जाने वाले बलरामपुर में अब विकास के नए आयाम स्थापित हो रहे हैं। जिले में मेडिकल कॉलेज की स्थापना से स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूती मिली है। वहीं, मां पाटेश्वरी विश्वविद्यालय की स्थापना से स्थानीय छात्राओं और युवाओं को उच्च शिक्षा के बेहतर अवसर उपलब्ध होंगे। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार स्वास्थ्य, शिक्षा, सड़क और कानून-व्यवस्था को मजबूत करने के लिए लगातार काम कर रही है। सरकार का संकल्प है कि विकास का लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुंचे और लोगों को बुनियादी सुविधाओं के लिए दूसरे जिलों पर निर्भर न रहना पड़े। मुख्यमंत्री ने 803 करोड़ रुपये की लागत वाली 78 परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास करते हुए कहा कि डबल इंजन सरकार विरासत के सम्मान और विकास के कार्यों को साथ लेकर आगे बढ़ रही है। जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने आगामी विधानसभा चुनाव के संदर्भ में भी अपनी बात रखी। उन्होंने एनडीए की जीत का विश्वास जताते हुए 80 प्रतिशत सीटें जीतने का दावा किया। इस अवसर पर विधायक पलटू राम, विधायक कैलाश नाथ शुक्ला, विधायक राम प्रताप वर्मा, जिला पंचायत अध्यक्ष आरती तिवारी, भाजपा जिलाध्यक्ष राकेश सिंह और एमएलसी अवधेश सिंह सहित कई जनप्रतिनिधि एवं पार्टी पदाधिकारी मौजूद रहे। मुख्यमंत्री की जनसभा में विकास परियोजनाओं के साथ-साथ कानून-व्यवस्था और आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर दिए गए बयानों ने राजनीतिक माहौल को गरमा दिया।

सुविधा के अनुसार रंग बदलना ही कांग्रेस की राजनीति है : रविंद्र चव्हाण

ठाणे/नवी मुंबई। भाजपा के महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष रविंद्र चव्हाण ने कांग्रेस की दोहरी राजनीति की आलोचना करते हुए सोशल मीडिया पर एक पोस्ट साझा की। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह का कोलकाता में दिया गया भाषण साझा करते हुए उन्होंने कांग्रेस पर तीखा हमला बोला। अमित शाह पश्चिम बंगाल भाजपा विधायक दल की बैठक में बोल रहे थे। रविंद्र चव्हाण ने अपनी पोस्ट में कहा, ह्यसुविधा के अनुसार रंग बदलना ही कांग्रेस की राजनीति है! जिन राज्यों में लगातार 40-40 वर्षों तक कांग्रेस का कोई मुख्यमंत्री नहीं बन सका, वहाँ उन्हीं के सहयोगी दलों की सरकारें थीं। वोट चोरी का आरोप लगाने वाले राहुल गांधी और कांग्रेस के नेता इस बारे में एक शब्द भी नहीं बोलेंगे। इसे ही कहते हैं–उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे! इस बीच, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने अपने भाषण में देश के विभिन्न राज्यों का उल्लेख करते हुए बताया कि कितने वर्षों से वहाँ कांग्रेस का कोई मुख्यमंत्री नहीं बना है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस को इस हार के बाद आत्ममंथन करने की आवश्यकता है। राहुल गांधी के नेता बनने के बाद से देश की जनता समय-समय पर उनके खिलाफ अपना फैसला सुना रही है और राहुल गांधी के नेतृत्व में इंडिया गठबंधन एक बार फिर बिखरने लगा है। कांग्रेस की इन विफलताओं पर निशाना साधते हुए रविंद्र चव्हाण ने एक बार फिर भाजपा का पक्ष मजबूती से सामने रखा है।

घाट-घाट अंजलि, बूंद-बूंद में पुरखों की स्मृति

वाराणसी। गंगा की लहरों पर तैरती आस्था, हाथों में तिल और जल, मंत्रों के बीच जुड़ते हाथ और स्मृतियों में जीवंत होते पूर्वज...। सर्वपितृ अमावस्या पर शनिवार को काशी के घाटों से लेकर कुंडों और तालाबों के किनारे तक श्रद्धा का ऐसा ही दृश्य नजर आया। पितृपक्ष के अंतिम दिन पितरों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए श्रद्धालुओं ने विधि-विधान से श्राद्ध, तर्पण और पिंडदान किया। सुबह से शुरू हुआ अर्पण-तर्पण का सिलसिला देर शाम तक चलता रहा। हर अंजलि में पूर्वजों के प्रति सम्मान था, हर प्रार्थना में उनके आशीर्वाद की कामना और हर कर्मकांड में पीढ़ियों से चली आ रही परंपरा के प्रति अटूट विश्वास. दशाश्वमेध घाट समेत गंगा के विभिन्न घाटों पर श्रद्धालुओं ने पवित्र स्नान के बाद पितरों के निमित्त जल अर्पित किया। पुरोहितों के सानिध्य में वैदिक मंत्रोच्चार के बीच श्राद्धकर्म संपन्न हुए। कई श्रद्धालुओं ने अपने दिवंगत माता-पिता, दादा-दादी और अन्य पूर्वजों का स्मरण कर तर्पण किया। घाटों के अतिरिक्त कुंडों और तालाबों के किनारे भी लोगों ने अपने सामर्थ्य और परंपरा के अनुसार धार्मिक अनुष्ठान किए।

पितृ विसर्जन केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि अपनी जड़ों को याद करने और जीवन के प्रति कृतज्ञ होने का अवसर भी है। भारतीय परंपरा में पितरों का स्मरण उस ऋण को स्वीकार करने का भाव है, जिसके सहारे परिवार, संस्कार और पीढ़ियों की निरंतरता बनी रहती है। इसी भावना के साथ श्रद्धालुओं ने तिल, कुश और जल अर्पित कर अपने पूर्वजों की आत्मिक शांति की कामना की। मान्यता है कि सर्वपितृ अमावस्या पर उन पूर्वजों का भी श्राद्ध-तर्पण किया जा सकता है, जिनकी मृत्यु की तिथि ज्ञात नहीं है अथवा किसी कारणवश नियत तिथि पर श्राद्ध नहीं हो सका। इसी कारण इस दिन का विशेष धार्मिक महत्व है। श्रद्धालुओं ने पितरों के निमित्त दान-पुण्य किया और परिवार की सुख-शांति तथा समृद्धि के लिए प्रार्थना की। परंपरा का निर्वाह, स्मृतियों को नमनकाशी में गंगा केवल नदी नहीं, बल्कि जीवन और मृत्यु के बीच बहती आस्था की अविरल धारा हैं। यहां पितरों के निमित्त अर्पित जल की प्रत्येक अंजलि में स्मृतियों का संसार समाया रहता है। किसी ने अपने दिवंगत पिता को याद किया तो किसी ने मां के स्नेह को नमन किया। किसी ने अपने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता जताई तो किसी ने आने वाली पीढ़ियों को संस्कारों की इस परंपरा से जोड़ने का संकल्प लिया। सूर्य के पश्चिम की ओर ढलने के साथ घाटों पर दिनभर के अनुष्ठानों का क्रम धीरे-धीरे सिमटता रहा, लेकिन श्रद्धालुओं की भावनाओं में पूर्वजों के प्रति सम्मान और स्मरण की लौ बनी रही। सर्वपितृ अमावस्या के साथ पितृपक्ष का समापन हुआ। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, यह अपने पितरों को श्रद्धापूर्वक विदा करने और उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन है।